हिंदी पत्रिका

गौरैया

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रथम अंक (रेल-वाणिज्यिक लेखापरीक्षा पत्रिका) **वर्ष: 2020-21**

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रेलवे-वाणिज्यिक कार्यालय
4, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002

(छायाचित्र सौजन्य:श्री तिलक राज)

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (रेलवे-वाणिज्यिक) का कार्यालय
4, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली
हिंदी पखवाड़ा
13 सितंबर 2019-27 सितंबर 2019
संदेश
हिंदी में कार्य करें, राष्ट्र का गौरव बढ़ाऐं

हिंदी पखवाड़ा- 2019

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

गौरैया

(रेल-वाणिज्यिक लेखापरीक्षा पत्रिका)

(प्रथम् अंक)

विभागीय वार्षिक गृह-पत्रिका, वर्ष-2020-21

पत्रिका-परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री बि. आर. मंडल, पूर्व महानिदेशक

संरक्षक

श्री कमलजीत सिंह रामुवालिया, प्रधान निदेशक

संपादक मंडल

श्री बन्दन कुमार , कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री राजीव कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

श्री योगेश, आँकड़ा प्रविष्टि प्रचालक

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रेलवे-वाणिज्यिक का कार्यालय

4, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002

अस्वीकरण- पत्रिका में प्रकाशित कविता, कहानी, आलेखों में व्यक्त विचार, सम्बंधित लेखकों के स्वरचित हैं। इन रचनाओं के लिए मुख्य संरक्षक, उप संरक्षक एवं संपादक मंडल से कोई भी उत्तरदायी नहीं है। यह पत्रिका विभाग के विभिन्न कार्यालयों में आंतरिक प्रचार प्रसार भर के लिए है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार, प्रोत्साहन और हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए है।

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	**संदेश** बि. आर. मंडल, पूर्व महानिदेशक		5
2	**संदेश** श्रीमती संगीता पुर्सवानी, उप-निदेशक		6
3	संपादक की कलम से	श्री बन्दन कुमार , कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	7-8
4	प्रशांत महासागर के द्वीपों में स्थित तथा विश्व का सबसे छोटा लोकतंत्र, नाउरु	बि. आर. मंडल, पूर्व महानिदेशक	10-16
5	अंतर्मन से संघर्ष	लेखकद्वय :- श्री सुरेन्द्र कुमार चौहान पूर्व निदेशक व सुश्री कामना वर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	17-19
6	गौरैया	श्री योगेश, वरिष्ठ. लेखापरीक्षक	20-21
7	लालच के पुजारी, मुस्कान	सुश्री नीलम मलिक, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	22
8	घर याद आता है	श्री संजय कुमार कुशवाहा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	23-24
9	मेरे अपने	सुश्री कामना वर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	25-26
10	देवी का मंदिर	श्री मनीष कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	27
11	हिंदी भाषा	श्री राजीव कुमार, व. लेखापरीक्षक	28-29
12	बेटी बचाओ, बेटी पढाओ	श्री नईम अहमद, लेखापरीक्षक	30
13	स्त्री	श्री निखिल देव बजाज, लेखाकार	31-32
14	परिश्रम का महत्व	श्री सचिन कुमार, लेखापरीक्षक	33
15	कोशिश कर, हल निकलेगा	श्री संजीव कुमार, वरिष्ठ लेखाकार	34
16	यात्रा वृत्तान्त	श्री जय प्रकाश, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	35-36
17	सीधे सवाल उलटे जवाब	युवानी मदान, सुपुत्री श्री तिलक राज	37
18	बूझो तो जानें	ईहा मदान, सुपुत्री श्री तिलक राज	38
19	पिता	श्री राजीव कुमार, व. लेखापरीक्षक	39-40
20	हाँ! क्योंकि मैं हूँ रेलगाड़ी	श्री योगेश, वरिष्ठ. लेखापरीक्षक	41
21	मन और आत्मा	सुश्री कामना वर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	42

संदेश

यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रेलवे -वाणिज्यिक के कार्यालय द्वारा **'गौरैया' (रेल-वाणिज्यिक लेखापरीक्षा पत्रिका)** के प्रथम अंक का प्रकाशन हो रहा है। मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगी।

इस पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने राजभाषा अधिनियम, 1963 व राजभाषा नियम, 1976 का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए तथा हिंदी को राजभाषा का समुचित सम्मान दिलाने हेतु अपनी सृजनात्मकता का परिचय दिया है। यह पत्रिका का प्रथम अंक है जो कि हिंदी राजभाषा के प्रचार-प्रसार में श्रृंखला का कार्य करेगी।

इस कार्यालय ने अपनी पत्रिका का नाम 'गौरैया' रखा है जिसका विशेष कारण यह है कि गौरैया पक्षी विलुप्त होने की कगार पर है और साथ ही साथ हम इस पत्रिका के माध्यम से लोगों के अन्दर गौरैया पक्षी के संरक्षण हेतु जागरूकता लाना चाहते हैं।

मैं अपने कार्यालय के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों से अपेक्षा करता हूँ कि कार्यालय का समस्त कार्य हिंदी में करने का प्रयास करें जो कि राजभाषा हिंदी के प्रति उनका बहुमूल्य योगदान होगा। मेरी कामना है कि **'गौरैया'** का प्रकाशन भविष्य में निरंतर जारी रहे और मैं पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मंडल व रचनाकारों को राजभाषा हिंदी के प्रति इस अतुलनीय निष्ठा के लिए आभार सहित हृदय से धन्यवाद तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य हेतु शुभकामनाएं देता हूँ।

बि. आर. मंडल
पूर्व महानिदेशक

संदेश

हिंदी हमारी **राजभाषा** है। इसका सम्मान करना तथा शासकीय कामकाज में अधिकाधिक प्रयोग करना हम सब का संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व है। किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी भाषा और संस्कृति से ही होती है।

प्रसन्नता का विषय है कि इस कार्यालय द्वारा **'गौरैया' (रेल-वाणिज्यिक लेखापरीक्षा पत्रिका)** का प्रथम अंक प्रकाशित किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार- प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु विभागीय पत्रिकाएं प्रेरणास्रोत का कार्य करती है और साथ ही साथ सृजनात्मकता को बढ़ावा देने में भी बल मिलता है।

पत्रिका में अपना सहयोग देने वाले अधिकारियों, कर्मचारियों और संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। मैं आशा करती हूँ कि यह पत्रिका हिन्दी राजभाषा के विकास में निरंतर अपना बहुमूल्य योगदान देती रहेगी।

पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास की शुभकामनाओं के साथ।

श्रीमती संगीता पुर्सवानी
उप-निदेशक

संपादक की कलम से.....

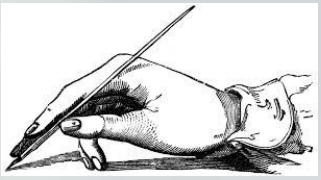

'हिंदी' जनमानस की भाषा तो है ही, अपितु विश्वपटल पर यह भारतीय संस्कृति की '**अस्मिता**' की वाहक भी है। हिंदी को महज आमजन की बोलचाल मानना, हिंदी की प्रभावशीलता को कमतर आंकना होगा। इस भाषा के अग्रसरण में असीमित संभावनाएं हैं, आवश्यकता अपने अंतर्मन के लोचन से मिथ्याभिमान वाली पट्टी को हटाना भर है। हमारा दायित्व सिर्फ ये कहने भर से नहीं है कि हिंदी को आगे बढाने की जिम्मेदारी, सरकार की है बल्कि हिंदी का व्यवहार दैनंदिन कार्य में करते हुए ही इसके प्रति अपने दायित्व का निर्वहन किया जा सकता है।

देश के **भाषाई व्योम** में परिलक्षित हालिया परिस्थितियों पर यदि गौर करें तो यह सर्वविदित है कि, भारत के पाश्चात्यीकरण की दिशा में हम खुद अंग्रेजी के **पिछलग्गू** इस कदर बन बैठे हैं कि अपनी वर्त्तमान व आने वाली पीढ़ी को भारतीय भाषाओं के अस्तित्त्व के समक्ष साक्षात संकट बना बैठे हैं। विडम्बना देखिये कि हिंदी-भाषी या अन्य भारतीय भाषा-भाषी क्षेत्र के लिए यह कहते हुए गर्व महसूस करते हैं कि उन्हें तो 'हिंदी' या अन्य भारतीय भाषा (जो उनकी मातृभाषा है), **ठीक से नहीं आती**। अगर हम समय रहते सचेत न हुए तो हिंदी अपनी अस्मिता के **अंश को** अपनी ही धरणी पर तरसेगी।

कोई भी भाषा अपने विकास की राह (शिखर तक) यूँ ही नहीं तय कर जाती है, ये तो क्रम-दर-क्रम विकास का फल होती है। आवश्यकतानुसार नए शब्दों का सृजन होता है, शब्दकोश, पारिभाषिक शब्दावलियों द्वारा समृद्ध होते हैं, लेकिन यह तो तभी संभव है जब हम इस भाषा को अधिकाधिक व्यवहार में लायें। ऐसे तो नहीं हो सकता कि वार्षिक समारोह के रूप में हिंदी दिवस , हिंदी पखवाड़ा और हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन कर समापन दिवस को हिन्दीमय **बना भर कर ही** छोड़ दें। इसके लिए हम सबको यह संकल्प लेना होगा कि हम सभी सरकारी कामकाज हिंदी में करने में गर्व महसूस करेंगे और हिंदी का प्रयोग न केवल निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति भर के लिए करेंगे, बल्कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्रदान करने के लिए इन प्रयासों को अंगीकृत करेंगे।

विभागीय वार्षिक पत्रिका "गौरैया" का **'प्रथम प्रयास'**, आप सभी को प्रस्तुत है। रचनाकारों ने अपने अंतः के अविरल भावों को लेखनी के माध्यम से कागज़ पर उकेरकर नूतन रचनाओं को आप तक पहुंचाने का प्रयास किया

है। पत्रिका में प्रकाशित सभी सामग्री राजभाषा 'हिंदी' के प्रचार-प्रसार के निमित्त ही समर्पित हैं। आलेख और रचनाएं सारगर्भित तथा प्रेरणादायी हैं। हम सभी सरकारी कार्यालय में हैं और सरकार की राजभाषा नीति को अमल में लाना , हमारा नैतिक कर्त्तव्य भी है। अस्तु, हमें यह कहने में गुरेज़ नहीं कि हमारा संगठन/कार्यालय भी राजभाषा नीतियों के अमल में अग्रसर है, तदनुसार राजभाषा हिंदी के प्रति पूर्ण निष्ठा के साथ प्रयासरत है। "गौरैया" के नन्हें कदमों की भांति हमारा प्रयास भी हिंदी साहित्य व राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में नन्हा सा कदम है।

सुधी पाठकों से अनुरोध है कि हमारे इस **प्रथम प्रयास** का आकलन कर बताएं- कैसा लगा ? कहाँ हम चूके ? ये बतायें तथा बहुमूल्य सुझाव दें और समृद्ध लेखों द्वारा पत्रिका के **पोषण** में सहयोग प्रदान करें।

आपका शुभाकाँक्षी

बंदन कुमार
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

कार्यालय के नए परिसर में दिनांक 23.09.2018 को कॉफ़मो परिसर से, आई सी सी डब्ल्यू भवन, 4 डी डी यू मार्ग में स्थानांतरण की कुछ झलकियाँ

प्रशांत महासागर के द्वीपों में स्थित तथा विश्व का सबसे छोटा लोकतंत्र, नाउरु

प्रशांत महासागर के द्वीपों पर स्थित नाउरु हजारों वर्षों से प्रशांत महासागर की तरंगों के विशाल विस्तार में स्थित एकांत देश है। ये आस्ट्रेलिया, अमरीका और एशिया की भूमि से परे प्रशांत महासागर में हजारों समुद्री मील में फैले हुए छोटे प्रवालद्वीप-चट्टानी (ऐटॉल-रीफ) तथा बहुत शांतिपूर्ण क्षेत्र में है तथा यह पृथ्वी की सतह का लगभग एक-तिहाई भाग घेरता है। पृथ्वी के कुल जल की मात्रा का लगभग आधे से ज्यादा भाग प्रशांत महासागर में है जिसकी औसत गहराई 13,000 फीट है। कुछ स्थलों पर यह 8,000 फीट से 30,000 फीट गहरा है। (जहाँ माउंट एवरेस्ट भी डूब सकता है)

प्रशांत महासागर के भगिनी द्वीपों में द्वीपों की पाँच श्रृंखलाएं हैं, जिनके नाम हैः

(i) हवाई द्वीप

(ii) क्रिसमस पालमाय्रा द्वीप श्रृंखला,

(iii) टोंगा द्ववा (पेनराह्यन) द्वीप,

(iv) पुकापुका- नासउ द्वीप से लेकर तुआमोतु द्वीप तथा

(v) सामोआ द्वीप से कुक एवं आस्ट्रल द्वीप तक

लाखों वर्ष पूर्व, कई ज्वालामुखी श्रृंखलाओं वाला मेलेनेथिआई महाद्वीप अस्तित्व में था। वर्तमान में ये अग्निकुंड हवाई-जापान-ताईवान-पीएनजी-सोलोमन्स-वनुआतु-टोंगा-कुकद्वीप-न्यूज़ीलैंड के मध्य से होकर गुजरते हैं। किंतु अब पूर्वी-केंद्रीय प्रशांत महासागर क्षेत्र इन प्रशांत महासागर बहनों को अपने में समाए हुए शांतिपूर्ण रुप से स्थित है। अतः नाउरु, किरीबाती और तुवालु में ज्वालामुखियों का प्रकोप नहीं है। ये निष्क्रिय ज्वालामुखी क्षेत्र हैं।

अन्य रुप से इन द्वीपों के निवासियों के उद्गम स्थलों के अनुरुप यहाँ रहने वाले लोग तीन प्रजाति वर्गों जैसे कि पोलीनीशिआई, माईक्रोनीशिआई तथा मेलेनिशिआई में वर्गीकृत हैं।

पोलीनीशिआई लोग सुदूर दक्षिणी गोलार्द्ध (Southern Hemisphere) से हैं, जैसे कि न्यूज़ीलैंड के माओरी, कुक द्वीप निवासी, टोंगा निवासी इत्यादि। कुछ दक्षिण आस्ट्रेलियाई आदिवासी भी पोलीनीशिआई हैं। वे बहुत लंबे व गोरे दिखते हैं परंतु शारीरिक रुप से हृष्ट-पुष्ट एवं घुंघराले बालों वाले होते हैं। कुछ फीजी निवासियों का रंग-रुप भी पोलीनीशिआई लोगों के समान है।

मेलेनेशिआई लोग अफ्रीकी लोगों से मिलते-जुलते हैं- काले, घुंघराले बाले, मध्यम कद काठी तथा शारीरिक बल में मज़बूत शरीर वाले। वे दक्षिण पश्चिमी प्रशांत द्वीपों की श्रृंखला में स्थित पापुआ न्यू गीनिया, सोलोमन द्वीप, फीजी और वनुआतु द्वीप इत्यादि में निवास करते हैं।

माईक्रोनीशिआई लोग उत्तरी तथा केंद्रीय प्रशांत द्वीपों में स्थित छोटे प्रवालद्वीपों (ऐटॉल) तथा अन्य द्वीपों जैसे किरीबाती, तुवालु, नाउरु, मार्शल द्वीप, पलाउ, गुआम, माईक्रोनीशिया के हवाई संघबद्ध राज्यों, ईस्टर द्वीपों इत्यादि में निवास करते हैं।

वर्तमान में न्यूज़ीलैंड तथा सुदूर पूर्व में फ्रेंच पोलीनीशिया सहित कुक द्वीप, सामोआ, टोंगा, किरीबाती, फीजी, तुवालु, मार्शल द्वीप, नाउरु, सोलोमन द्वीप, वनुआतु, माईक्रोनीशिया के संघबद्ध राज्य, मारीआनासु पालाउ, पापुआ न्यू गीनिया तथा न्यू केलीडोनिया द्वीप स्वतंत्र राष्ट्र हैं।

सामान्यतः इन देशों की अर्थव्यवस्था बहुत अभावग्रस्त और प्रशांत महासागर में स्थित आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, यूएसए तथा कुछ एशियाई देश, जैसे कि जापान, चीन इत्यादि बड़ी क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं वाले देशों पर निर्भर है। इन क्षेत्रों की सामरिक तथा अर्थिक महत्वाकांक्षाओं को साधारण विचारणा से सुगमतापूर्वक नहीं मापा जा सकता। इस क्षेत्र में बहुत लाभ प्राप्ति की संभावना है और प्रशांत द्वीपों के निवासी इस तथ्य से परिचित हैं।

कुल 22 प्रशांत महासागरीय देश अस्तित्व में हैं जो सारे प्रशांत महासागर पर फैले हुए हैं। इन्हें तीन राजनैतिक-महासागर खंडों यथा उत्तरी प्रशांत माहासागरीय, केंद्रीय प्रशांत महासागरीय तथा दक्षिणी प्रशांत महासागरीय द्वीप राष्ट्रों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

सबसे छोटा लोकतंत्र, नाउरु

नाउरु (अर्थात नाईरो या नावेरो) विश्व का सबसे छोटा लोकतांत्रिक गणराज्य देश है, जो कि मुश्किल से 12,000 की अत्यल्प घनत्व आबादी वाला, अंतर्राष्ट्रीय अक्षांश-रेखा (international dateline) के पश्चिम में 1287 किलोमीटर की दूरी पर 0° 32" दक्षिणी अक्षांश (latitude) तथा 160° 55" पूर्व देशांतर (longitude) पर केंद्रीय प्रशांत महासागर क्षेत्र में स्थित है। यह द्वीप भूमध्यरेखा (Equator) के दक्षिण में मात्र 42 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है जो कि इसे शाश्वत वसंती ऋतु प्रदान करता है। यह देश एक आदर्श एकांत ग्रह के समान मात्र एक द्वीप पर स्थित है तथा इससे 165 समुद्री मील तक इसके आसपास केवल किरीबाती के बनाना द्वीप (पूर्व में ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन फास्फेट से भरा ओशियन द्वीप के नाम से ज्ञात) के अतिरिक्त अन्य कोई द्वीप नहीं है। नाउरु का कुल क्षेत्र 5263 एकड़ (लगभग 21 वर्ग कि.मी. 4 कि.मी. व्यास सहित) है, यह अंडाकार (अथवा आम की आकृति) वाला है, इसका घेरा लगभग 30 किलोमीटर है और इसके चारों तरफ मूँगे की चट्टान है जो कि प्रशांत महासागर की निचले ज्वार वाली तरंगों की स्थिति मे दिखाई पड़ती है।

यह कठोर पथरीली मूँगे की चट्टान एक संकरे रेतीले तट को घेरती है जहाँ कई लोग तैराकी का आनंद लेते हैं और जहाँ से ज़मीन थोड़ा ऊपर उठती है, तथा एक उपजाऊ भूमि क्षेत्र का निर्माण करती है, जो कि 150 से 300 गज तक की चौड़ाई वाला है और द्वीप को चारों ओर से घेरता है तथा जहाँ अधिकांश लोग निवास करते हैं। तटीय बेल्ट के अंदरुनी क्षेत्र में मूँगे की चोटियों की कड़ी समुद्र तल से 40 से 100 फीट तक की ऊँचाई तक उठते हुए एक केंद्रीय पठार में मिल जाती है, जिसकी कुछ स्थानों पर 200 फीट तक ऊँचाई हो जाती है। नाउरु का सर्वोच्च शिखर समुद्र तल से 70 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। इस पठार में बड़े पैमाने पर फास्फेट के भंडार हैं तथा फास्फेट हटाने पर प्रागैतिहासिक मूँगे की चट्टानों वाले चूना पत्थर (लाईमस्टोन) मूँगे के पर्वत शिखर वाली ऊबड़खाबड़ भूमि उपलब्ध होती है।

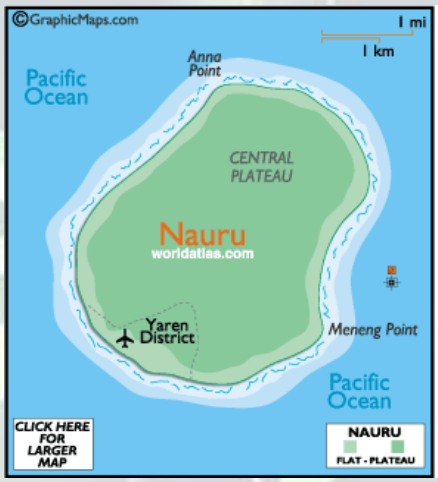

भूविज्ञान की दृष्टि से नाउरु बहुत पुराना भू-खंड नहीं है। यह ऊपर की तरफ उठा हुआ एक मूँगे का प्रवालद्वीप है। सामान्यतः इस प्रकार के मूँगे के प्रवालद्वीप भूभाग होते हैं जो कि खाड़ी की तरह घेराव करते हैं। नाउरु में इस प्रकार की अधिकांश भूमि समुद्र तल के साथ गहरे में मिश्रित होती है क्योंकि नाउरु मूलतः एक ज्वालामुखी था। इन ज्वालामुखी उत्सर्जनों के कारण भूमि सभी तरफ से प्रशांत महासागर के तल से लगभग 43,000 मीटर तक ऊँची उठती है। इस ज्वालामुखीय जलमग्न उभार की अनुमानित आयु लगभग 3,50,00,000 साल है। आज नाउरु के चारों ओर बहुत विस्तृत मूँगे की चट्टान है और समुद्र की गहराई के फलस्वरुप, नाउरु अपने गर्भ में बहुत ही विविधतापूर्ण प्रजातियों वाले जलचर प्राणियों को आश्रय प्रदान करता है।

फास्फेट भंडार, जिनका यूनाईटेड किंगडम, आस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैंड की सरकारों के बीच हुए समझौते के अंतर्गत ब्रिटिश फास्फेट कमिश्नरों द्वारा खनन किया गया था, द्वीप के मुख्य प्राकृतिक संसाधन थे। द्वीप के 5263 एकड़ के कुल क्षेत्र में से 4116 एकड़ को फास्फेट उत्पादक भूमि के रुप में वर्गीकृत किया गया था, बाकि क्षेत्र को नारियल वाली भूमि, फास्फेट-नारियल भूमि तथा संधारणीय बसावट हेतु अनिर्दिष्ट भूमि के रुप में वर्गीकृत किया गया था। आँकड़ो से यह देखा जा सकता है कि 1900 में फास्फेट भंडारों के आविष्कार से लेकर 1968 में नाउरु की स्वाधीनता तक लगभग 2,50,00,000 टन पृथ्वी से निकाला जा चुका था।

यद्दपि यह द्वीप भूमध्यरेखा के निकट है, तथापि यहाँ की जलवायु समुद्री पवन द्वारा संयमित तथा गीली एवं शुष्क तथा अधिकांशतः वसंत ऋतु वाली उपोष्णकटिबंधीय (sub-tropical) प्रकृति की पाई जाती है। किंतु शुष्क महीने पूर्वीय हवाओं से लक्षित होते हैं जो कि वर्ष के अधिकांश भाग के दौरान विद्यमान रहते हैं तथा पश्चिमी मानसून के दौरान लगभग चार माह (नवंबर-फरवरी) तक प्रायः आर्द्रतापूर्ण (गीला) मौसम रहता है।

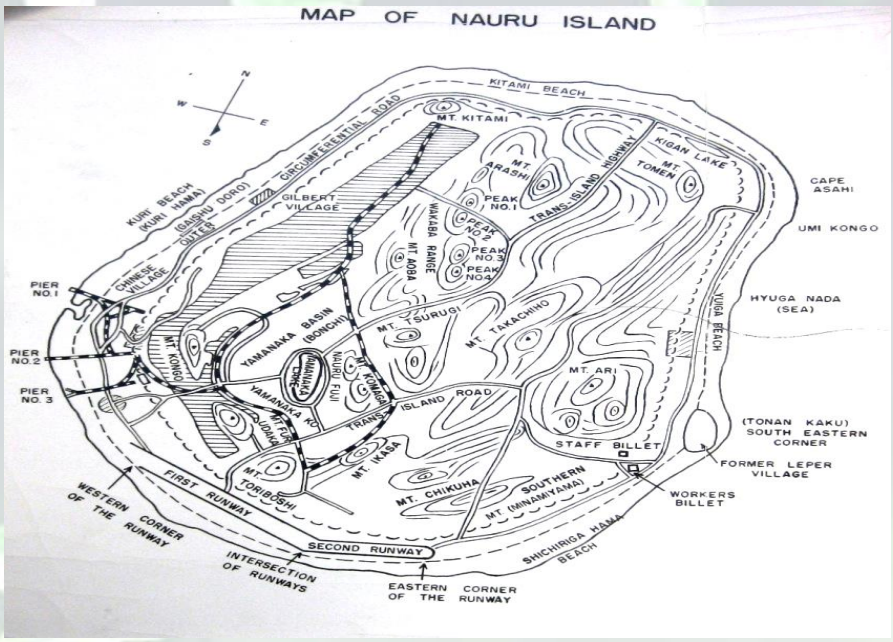

यह मानचित्र द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जापानी सेना द्वारा तैयार किया गया था जो नाउरु के सभी स्थानों को दर्शाने वाला सर्वाधिक शिक्षाप्रद मानचित्र है। गीले मौसम को छोड़कर जबकि छोटी-छोटी झाड़ियाँ स्पष्ट रुप से दिखाई पड़ती हैं, द्वीप में मौजूद वनस्पतियों मे बहुत विविधता नहीं है। जिन स्थानों पर फॉस्फेट का खनन हुआ है, वहाँ मूँगे के पर्वत शिखर धीरे-धीरे गौण/बाद में उगने वाले घास-पात से ढँकते जा रहे हैं।

केवड़ तथा नारियल एवं ताड़ के पेड़ तटीय बेल्ट में पाए जाते हैं, जबकि द्वीप के दूसरे एकमात्र उपजाऊ क्षेत्र बूआडा खाड़ी के आसपास नारियल, केला, अनानास, आम तथा कुछ अन्य फल व सब्जियाँ उगाई जाता हैं। निजी चीनी लोग

आसपास के गड्ढों में उपलब्ध थोड़ी मात्रा वाले खारे पानी का उपयोग कर खाड़ी के कोने में विभिन्न सब्जियाँ जैसे कि पपीता, नींबू, पत्तागोभी, मिर्च इत्यादि उगा रहे हैं। ताईवान तकनीकी मिशन भी टमाटर, पत्तागोभी, मिर्चे, ऐग-प्लांट तथा अन्य कई सब्ज़ियों की अच्छी किस्में उगा रहा है। किंतु यह सब इस द्वीप की आवश्यकता के लिए पर्याप्त नहीं है। द्वीप का एकमात्र कटहल का पेड़ बुआडा में नेल्सन हाउस में है। श्री नेल्सन हमारी मित्रता के प्रतीक के रुप में हमें यह फल मुक्तहस्त से कई बार भेंट करते थे। वे रात में चट्टानों से उड़न मछलियाँ भी पकड़ते थे और हमें व अन्य कई लोगों को बेचा करते थे।

द्वीप पर मौजूद लकड़ी का कोई व्यापारिक मूल्य नहीं है। टमाटर के पेड़ के तने और शाखाएँ गाँठों से भरे हैं तथा मुड़े हुए हैं एवं कठोर काष्ठ प्रकृति के हैं और छोटी फर्नीचर की वस्तुएँ बनाने के अलावा इनका किसी प्रयोजन के लिए उपयोग नहीं किया जा सकता है। केवड़े का पेड़ एक पत्ता उत्पादित करता है जिसका घरेलू चटाई-निर्माण तथा अन्य घरेलू प्रयोजनों हेतु उपयोग किया जाता है।

नाउरु की मिट्टी अत्यधिक छिद्रपूर्ण है तथा भूमि के किसी भाग में पानी की जमावट नहीं होती है। क्योंकि वर्षा भी अनियमित है, अतः कृषि उत्पादन स्थानीय उपभोग हेतु फल तथा सब्जियाँ उगाने तक ही सीमित है।

नाउरु में कोई देशज पशु नहीं हैं। पक्षी भी बहुत कम हैं। कुत्ते जर्मनी से आए लोग अपने साथ लाए थे जिनमें से कुछ प्रजातियाँ अब पालतू अथवा जंगली हो गई हैं। ऐसा कहा जाता है कि इन कुत्तों को 'रेबीज़' नहीं होता। इस भूमि पर काफी मात्रा में चूहे तथा अन्य जानवर कम संख्या में हैं। समुद्र मछलियों तथा अन्य जलचर जीवों से भरा हुआ है। द्वीप पर सीमित संख्या में वराह तथा मुर्गीपालन शुरु किया गया है, तथा ताईवान की फर्में और उत्पादन करने हेतु कार्यरत हैं। बुआडा खाड़ी तथा कुछ छोटी उत्तर-पूर्वी खाड़ियों में दुग्धमत्स्य तथा टिलेपिया को प्रयोगिक आधार पर शुरु किया गया है।

1902 में नाउरु में फॉस्फेट के आविष्कार के बाद यह विश्व का सर्वाधिक धनी देश बन गया। एक समय पर 1980 के दशक में यह केवल 8000 जनसंख्या वाला किंतु 19000 अमरीकी डालर प्रतिव्यक्ति आय वाली दूसरे स्थान की समृद्ध अर्थव्यवस्था हो गया था। किंतु वर्तमान नाउरु अविवेकपूर्ण खनन, फॉस्फेट के घटते भंडारों तथा उसके निवेशों के खो जाने के कारण अपनी पूर्व वैभवशाली स्थिति काफी हद तक खो चुका है। किंतु नाउरु आस्ट्रेलिया, ताईवान, जापान तथा अन्य देशों से बहुत प्रचुर मात्रा में सहायता प्राप्त कर रहा है। इन देशों के अतिरिक्त, उनके पास 200 समुद्री मील का अंतर्राष्ट्रीय आरक्षित आर्थिक क्षेत्र है जिसमें मछली पकड़ने हेतु आस्ट्रेलिया, ताईवान इत्यादि को अनुज्ञा पत्र प्रदान किया गया है। उनकी फॉस्फेट आधारित अर्थव्यवस्था अब सिमटती जा रही है और नाउरु पुनर्वास निगम खनन किए गए क्षेत्रों के पुनर्स्थापन हेतु प्रयासरत है।

चूँकि नाउरु चौदह प्रशासनिक जिलों तथा 11,218 लोगों की आबादी (2005 की जनगणनानुसार) वाले 169 गाँवों में संयोजित व विभालित किया गया है, अतः इसकी एकल सदन वाली संसद में 19 सांसद सदस्यों की संख्या है तथा इसे आठ चुनाव संसदीय क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है। नाउरु में कोई राजनैतिक दल नहीं हैं। प्रत्येक सदस्य नाउरु एवं नाउरु निवासियों के लिए उसके वायदों तथा आदर्शों वाला अपने आप में एक संपूर्ण दल के समान है। यह एक दल-विहीन लोकतांत्रिक प्रणाली है। अतः नाउरु में कोई राजनैतिक संहार या हत्याएँ नहीं होती हैं। 1966-67 में संविधान का निर्माण करते समय, संविधान निर्माताओं का यह सचेतन प्रयास था कि सत्तारुढ़ राजनैतिक शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा के चलते किसी प्रकार का खून-खराबा न हो। लोकतांत्रिक आम चुनाव अधिमान्य मतदान अधिकारों के साथ तीन वर्षों में एक बार करवाए जाते हैं। कोई भी मतदाता अपनी पसंद के अनुरुप क्रमानुसार सभी उम्मीदवारों के लिए मतदान कर सकता है। इन्हें प्रत्येक उम्मीदवार को मिले अधिमान्य मत के नाम से पुकारा जाता है। चुनाव समाप्त होने के बाद, सरकार गठन के लिए

संसद सदस्यों के बीच में स्पष्ट विभाजन होता है और अल्पमत वाले संसद सदस्यों का समूह विपक्ष के पटल पर आसीन होता है। 18 संसद सदस्यों में से सत्तारुढ़ दल के 6 संसद सदस्य मंत्री बनते हैं जिनमें राष्ट्र के कार्यपालक प्रमुख के रुप में राष्ट्रपति भी शामिल होते हैं।

नाउरु निवासियों की उत्पत्ति

नाउरु निवासियों की उत्पत्ति का इतिहास अस्पष्ट है तथा लिखित अभिलेखों के अभाव में उनके वास्तविक उद्गम स्रोत को किसी एक सिद्धांत द्वारा तय नहीं किया जा सकता है। यह ज्ञात नहीं है कि नाउरु पर सर्वप्रथम कदम रखने वाले लोग वहाँ कब और कैसे पहुँचे थे। हालाँकि नाउरु की पौराणिक परंपराओं के अनुसार यह माना जाता है कि इसके प्रथम निवासी लगभग 3000 वर्ष पूर्व मिले थे। मेरे मित्र, नाउरु ओलंपिक समिति के महासचिव श्री प्रेस नाईम्स मुझे बताते थे कि उनके पूर्वज गोवा, भारत से थे। मेरी निजी सहायक, श्रीमती कैटरीना हेडमन मुझे बताया करती थी कि उनके दादा मार्शल के निवासी थे तथा उनकी दादी गिल्बर्ट निवासी थी और अंततः वे लोम नाउरु निवासी बन गए। इसी प्रकार अन्य कई व्यक्ति किरीबाती या तुवालु या मार्शलस से होने का दावा करते थे तथा कई अन्य स्वयं को मिश्रित वंश परंपरा वाला बताते थे। तथ्य यह है कि अपने मातृवंशीय समाज के कारण अधिकांश नाउरु निवासी अपने निजी जीवन, विशेषतः अपने उद्गम संबंधी जानकारी किसी विदेशी के साथ साझा करने के लिए अनिच्छुक रहते हैं। सरल शब्दों में कहा जाए तो वे अपने उद्गम स्रोतों के बारे में ज्यादा बात नहीं करना चाहते। लगभग प्रत्येक नाउरु निवासी का एक पृथक इतिहास एवं वंश परंपरा है जिसे मात्र वह ही जानता है और जब तक शोधकार्य के प्रयोजन से उनसे अनुनय या निवेदन न किया जाए, तब तक वह इन मसलों पर चुप्पी साधे रखते हैं।

शोधकर्ताओं ने नाउरु निवासियों के उद्गम इतिहास को चिन्हित करने के लिए कई सिद्धांत प्रस्तावित किए हैं। इन्हें निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता हैः

(i) पौराणिक (प्रसिद्ध) कड़ियाँ
(ii) आनुवांशिक कड़ियाँ
(iii) भाषायी कड़ियाँ तथा
(iv) भौगोलिक कड़ियाँ

हालाँकि नाउरु का समाज एक मातृसत्तात्मक समाज के रुप में शुरु हुआ था और महिलाओं का उनकी जीवनशैली पर कई तरह का वर्चस्व रहा है। सुनसान भौगोलिक तथा प्राकृतिक अवस्थिति को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित तथ्य वर्णित किए जा सकते हैः

(i) **पौराणिक (प्रसिद्ध) कड़ियाँ:** किन्हीं व्यक्तियों के उद्गम का पता लगाने के लिए, पुराणों तथा किंवदन्तियों का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है। नाउरु की कई पौराणिक कथाएँ तथा किंवदन्तियों का एशियाई दंतकथाओं तथा कहानियों के साथ गहरा संबंध है। उनके पहाडियों, पत्थरों तथा वनों इत्यादि की प्राचीन काल से चली आ रही पूजा-अर्चना उनके एशियाई प्रजातियों के साथ संबंधों की ओर इशारा करती है। पुनः इन संबंधों से दक्षिण अमरीका की पेरु सभ्यताओं के साथ संबंधों के इशारे मिलते हैं। इससे कुछ पारंपरिक खेलों, किंवदन्तियों तथा शब्दों के पेरु से शुरु होने के संकेत मिलते हैं चूँकि नाउरु निवासी 'इत्सिवेन' (वयस्कों द्वारा खेला जाने वाला) तथा 'वेब्वे' (युवाओं द्वारा खेला जाने वाला) नामक दो खेल खेलते हैं, जो कि किन्हीं प्रशांत द्वीपों में न खेले जाकर मात्र पेरु में खेले जाते हैं। यह

अपने-आप में एक अनूठा तथ्य है। नाउरु के स्ट्रिंग खेल एक अन्य अनूठी व जटिल कला है। डाबविडो परिवार इसका अभ्यास करते हैं तथा वे विश्वभर में इसके सर्वोत्तम विशेषज्ञ हैं। उनके पास इस कौशल में 200 से अधिक युक्तियाँ उपलब्ध हैं। ये आँकड़े पेरुवियन स्ट्रिंग संस्कृति से बहुत मिलते-

(ii) जुलते हैं। पक्षी पकड़ने संबंधी किंवदन्तियाँ भी पेरु निवासियों के निकटतम है। नाउरु का एक अन्य प्रसिद्ध चरित्र 'एईगिगु' नामक लड़की है, जिसके बारे में प्रचलित है कि उसने चाँद (मारमारन) पर जाकर उससे शादी कर ली, यह पेरु के 'एईगिगा' से मिलता-जुलता है। किंतु ये पेरु या एशियाई प्रजातियों के नाउरु से उद्भूत होने के विषय में बहुत निर्णयात्मक साक्ष्य प्रस्तुत नहीं करता है।

(iii) **आनुवांशिक कड़ियाँ:** आनुवांशिक अध्ययन विविध प्रकार के आनुवांशिक संबंध दर्शाते हैं, जिनमें से अधिकांश फिलीपीन्स से संबंध रखते हैं। तथा साथ ही, कुछ चीनी, अफ्रीकी तथा मेलेनेशिआई संबंध भी दर्शाते हैं। कुछ नाउरु निवासी यह दावा करते हैं कि उनके आनुवांशिक संबंध गोवा, भारत से शुरु हुए थे। किंतु इसे संतोषजनक रुप से निर्णीत नहीं किया जा सका है।

(iv) **भाषायी कड़ियाँ:** भाषायी कड़ियों का सिद्धांत किन्हीं व्यक्तियों के उद्गम का अध्ययन करने के लिए एक स्थापित व विश्वसनीय प्रक्रिया है। नाउरु की भाषा संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाओं में से एक है, परंतु अब तक इस भाषा पर बहुत कम अध्ययन किए गए हैं जो इसके उद्गम को चिन्हित करने में असमर्थ रहे हैं। वर्तमान नाउरु भाषा में गिल्बर्ट भाषा तथा पोनेप (माईक्रोनीशिया के संघबद्ध राज्य), मार्शल द्वीप तथा सोलोमन द्वीप सरीखी अन्य कई माईक्रोनीशियाई भाषाओं के शब्द शामिल हैं। किंतु ये शब्द इस भाषा में आधुनिक काल में पाए गए हैं। नाउरु भाषा का वांशिक वर्गीकरण पेशेवर भाषाशास्त्रियों के लिए एक अत्यधिक कठिन कार्य सिद्ध हुआ है। बायरन बी.बेन्डर के कथनानुसार, "माईक्रोनीसिया के भीतर व बाहर बोली जानेवाली भाषाओं के साथ कोई करीबी रिश्ता अब तक निर्णीत नहीं किया जा सका है।" अतः इसीडोर ड्येन ने आस्ट्रोनीशियाई भाषा समूह के अपने शब्दकोष संग्रह आँकड़ों के अध्ययन में इस भाषा को एक स्वंतत्र समन्वित शाखा के रुप में अपनी अलग कोटि में श्रेणीबद्ध किया है। ऐसे परिदृश्य में नाउरु निवासियों के उद्गम को भाषायी कड़ियों के माध्यम से निर्णीत कर पाना संभव नहीं है।

(v) **भौगोलिक कड़ियाँ:** यह सिद्धांत नाउरु निवासियों के उद्गम के संबंध में काफी हद तक सुनिश्चित है। इसके कथनानुसार नाउरु निवासी मूल रुप से माईक्रोनीशिआई हैं तथा ये पूर्वी एशियाई माईक्रोनीशियाई द्वीपों से आते हैं। शक्तिशाली सामुद्रिक ज्वार बहाव कई पुराने गिल्बर्ट द्वीप निवासियों को नाउरु ले आए तथा वे लोग वापस नहीं जा सके। एक अन्य सामुद्रिक ज्वार बहाव कुछ मेलेनेशिआई लोगों को नाउरु पहुँचाने में कारक था। इसी प्रकार पुराने दिनों में मुख्यतः टोंगा निवासियों सहित पोलीनीशियाई निवासियों के नाउरु में आगमन के कारण कुछ परिवारों में पोलीनीशियाई नैन-नक्श पाए जाते हैं। चूँकि टोंगा निवासी मुख्यतः साहसी समुद्र-यात्री थे, अतः वे अपनी नावों से कई द्वीपों तक गए और वहाँ उन्होंने अपने घर बसाए।

इन चार स्रोतों के अलावा, जहाज़ डूबने के कारण भटके नाविक, जहाज़ के कप्तानों द्वारा दंडस्वरुप निष्कासित कर दिए गए नाविक इत्यादि प्राचीन समुद्री जीवन की सामान्य घटनाएं नाउरु की सभ्यता के विकास का कारण बनीं।

इन तरीकों से कई लोग नाउरु में पहुँचे। कुछ ऐसी कथाएं हैं कि अनाबार के निवासियों के कई वंशज किसी जहाज़ के कप्तान द्वारा निष्कासित किए गए मेलेनेशिआई व्यक्ति से उद्भूत हुए हैं।

प्रशांत महासागरीय इतिहास के अनुसार, समुद्र तटों पर खोज करने वाले तथा परिव्यक्त व्यक्ति/ निष्कासित व्यक्ति द्वीपों के जीवन में प्रवेश करने वाले यूरोपीय निवासियों का प्रथम वर्ग था, जो कि अल्प संसाधनों के साथ यहाँ पहुँचा था। वे अपने जीवन हेतु इन द्वीपों के निवासियों तथा पर्यावरण व संस्कृति के प्रसाद पर निर्भर थे। उन्होंने यहाँ के लोगों के जीवन में नए विचारों व आदतों का सूत्रपात किया। एच.ई.मौड के अनुसार, समुद्र तट अन्वेषक वे लोग थे जिन्होंने यूरोपीय मुद्रा अर्थव्यवस्था से अलग होकर अपना जीवन जीना चुना था। वे अपने जीवन निर्वाह के लिए द्वीपों के मूल निवासी समुदायों पर निर्भर थे तथा समय बीतने के साथ वे उस समाज के अंग बन गए। संक्षेप में, उन्होंने स्वेच्छा से वहाँ रहना चुना था। दूसरी ओर, परित्यक्त या निष्कासित किए जाने अथवा द्वीपों के निवासियों द्वारा अपहृत किए जाने के कारण वहाँ रहने पर विवश हो गए थे।

चूँकि उपरोक्त सिद्धांतों में से कोई भी सिद्धांत निर्णायक नहीं है, इसलिए सामान्यतः ऐसा माना जाता है कि नाउरु निवासी पोलीनीशियाई, माईक्रोनीशियाई तथा मेलेनेशिआई निवासियों का समूह है, जो कि अपने रंग-रुप तथा औसत कदकाठी के चलते पोलीनीशियाई निवासियों के ज्यादा निकट हैं। नाउरु निवासी मुख्यतः साँवले रंग वाले हैं तथा इनके बाल काले घने होते हैं। पुरुषों का औसत कद लगभग 5 फीट 6 इंच होता है और महिलाओं की लंबाई पुरुषों से दो या तीन इंच कम होती है। किंतु भौगोलिक रुप से ये लोग माईक्रोनीशियाई द्वीप क्षेत्रों के भीतर स्थित हैं। इसका अर्थ है कि उनके गिल्बर्ट निवासियों (किरीबाती) के साथ घनिष्ठ संबंध हैं। उनमें भाषायी संबंधी तथा काला जादू के रुप में गिल्बर्ट निवासियों का प्रभाव भी स्पष्टतः प्रकट होता है। ऐसी मान्यता है कि नाउरु निवासियों ने काले जादू का ज्ञान किरीबाती लोगों से पाया है।

नाउरु निवासियों के उद्गम को समझने में नाउरु की किंवदन्तियों का अनूठा स्थान है। यह बहुत रोचक तथ्य है कि नाउरु निवासी नाउरु की युगल-छवि रुप भूमि के बारे में जानते थे जो कि किरीबाती का बनाबा द्वीप है। इसकी आकृति नाउरु से हूबहू मिलती है तथा इसमें फॉस्फेट के प्रचुर भंडार हैं। यह कहा जाता है कि बनाबा नाउरु का भाग था और यह भूवैज्ञानिक रुप से अनाबार खाड़ी में स्थित था।

यद्यपि नाउरु निवासियों का मूल उद्गम अब तक तय नहीं किया जा सका है, तथापि यह एक सुनिर्णीत तथ्य है कि वे विश्व की किसी प्राचीनतम सभ्यता से संबंध रखते हैं और वे एक विशिष्ट जीवनशैली समाज सहित इस द्वीप में कई हज़ार वर्षों से एकांतपूर्ण जीवन बिता रहे थे जो कि युगों-युगों से उनके पूर्वजों द्वारा निर्वहन की गई उनकी पौराणिक तथा ऐतिहासिक परंपरा की प्रमाण है।

बि. आर. मंडल
पूर्व महानिदेशक

अन्तर्मन से संघर्ष

जिन्दगी क्या है? कहते हैं जिन्दगी हमारे अनुभवों की किताब है। कुछ अनुभव हमें बहुत कुछ सिखा जाते हैं लेकिन कुछ अनुभव ऐसे होते हैं जो जिन्दगी में सिर्फ एक एहसास बनकर रह जाते हैं। ऐसा ही एक अनुभव मेरी जिन्दगी का है जो आज तक मेरे अन्तर्मन का संघर्ष बना हुआ है।

यह बात उन दिनों की है जब मेरी तैनाती ग्वालियर में हुआ करती थी। एक बार दीपावली घरवालों के साथ मनाने के लिए मैं छुट्टी लेकर घर आ रहा था। ग्वालियर रेलवे-स्टेशन पर बैठा मैं ट्रेन का इंतजार कर रहा था। मेरी ट्रेन 2-3 घण्टे विलम्ब से थी। जिन्दगी की भागदौड़ में हम जिन्दगी की खूबसूरती को देखना तो भूल ही जाते हैं, पर उस दिन मेरे पास वक्त ही वक्त था। ग्वालियर रेलवे-स्टेशन का वो सुंदर दृश्य आज भी मेरी आँखों के सामने है। जिस प्लेटफार्म पर मैं बैठा था उसके सामने ही एक वट का वृक्ष था जिसके ऊपर भूरे रंग की साइबेरिया की चिड़ियों का शोर था। मैं सोच ही रहा था कि क्या ये सारी चिड़ियाँ वापिस अपने घर जा पाती होंगी ? तभी मेरी नज़र एक व्यक्ति पर पड़ी जो बहुत बीमार सा लग रहा था और उसके साथ दो औरतें बैठी थी। सफेद कुर्ते-धोती में वो आदमी बहुत ही मायूस लग रहा था। जिज्ञास्तमक मैं उन लोगों के पास पहुँचा और छोटी उम्र की महिला से बातचीत शुरु की। कुछ मदद की उम्मीद से उसने मुझे अपनी कहानी सुनानी शुरु की। कहानी सुनकर ऐसा लगा जैसे कि यह कोई बीते समय की बात नहीं बल्कि रोजमर्रा की कहानी है। अचानक दृश्य-व-दृश्य ऐसा लगा जैसे कि पूरी कहानी मेरे आँखों के सामने चल रही है।

यह कहानी है राजस्थान के एक छोटे से गाँव गंगानगर की और उस छोटे से गाँव के एक छोटे से घर की। घर है रतनलाल और जानकी देवी का। रतनलाल परेशान अपने घर के बाहर खड़ा है। परेशान होने के साथ-साथ रतनलाल खुश भी है क्योंकि आज उसका वंश आगे बढ़ने वाला है। अन्दर घर से जोर-जोर से चिल्लाने की आवाजें आ रही हैं। तभी बच्चे के रोने की आवाजें आने लगी। रतनलाल का दिल जोर से धड़कने लगा। तभी कुंती दाई जिसे इस कार्य में तीस साल का अनुभव है 'बधाई हो' 'बधाई हो' कहती हुई बाहर आई। रतनलाल की ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। बाहर आकर कुंती दाई बोली- 'मुबारक हो! रतनलाल, घर में लछमी आई है, लछमी'। रतनलाल के तो जैसे चेहरे का रंग ही फीका पड़ गया। पर वक्त हर जख्म का ईलाज है। धीरे-धीरे रतनलाल को बच्चे की किलकारियों ने मोहित कर दिया। अमृता आज सात वर्ष की हो गई और जानकी देवी की इतने वर्ष बाद भगवान ने फिर से गोद भर दी। पर जानकी देवी ज्यादा खुश नहीं है। तीसरे महीने में ही उसने सास-ससुर और पति के डर से चोरी-छुपे अपने होने वाले बच्चे का लिंग जाँच करवा लिया था और जानकी जानती थी कि इस बार भी लड़की होगी। परन्तु माँ का ह्रदय यह जानते हुए भी उसने रतनलाल को कुछ भी नहीं बताया। अपने अंतर्मन से संघर्ष करती हुई जानकी ने यह फैसला कर लिया था कि चाहे कुछ भी हो जाए वो इस बच्चे को जन्म देगी। आखिर भगवान ने इतने वर्ष के बाद उसे यह मौका दुबारा दिया है। भारत का दुर्भाग्य तो देखिये, भले ही गांवों में और कोई सुविधा हो ना हो, पर इस तरह के गैर-कानूनी क्लीनिक आपको जरूर मिलेंगे, जहाँ पर लिंग जाँच हो सके और गाँव के लोगों को भी और कोई ज्ञान हो ना हो पर इस तरह के धंधों का पूरा ज्ञान होता है। बस इसी उधेड़बुन में नौ महीने बीत गए और आज नतीजे का दिन था। रतनलाल को पूरा विश्वास था कि इस बार उसकी प्रार्थना जरूर मंजूर होगी। पर भगवान को तो शायद कुछ और ही मंजूर था। दोबारा कन्या को देखकर उसका दिल ही टूट गया। परन्तु रतनलाल जानकी को बहुत प्रेम करता था इसलिए धीरे-धीरे अपनी गृहस्थी में मशरूफ हो गया। दूसरी बेटी का नाम सुधा रखा गया

और अपने नाम के विपरीत सुधा हर वक्त अपने आप में बेसुध रहती थी। घर में सबसे छोटी होने की वजह से सुधा सबकी लाडली थी और अमृता के लिए तो वो छोटी बहन कम बेटी ज्यादा थी।

वक़्त का पहिया धीरे-धीरे फिर घूमा। सुधा अब सात साल की हो गयी है और अमृता चौदह साल की। आज घर में बहुत ख़ुशी का माहौल है। अमृता के लिए एक बहुत ही अच्छा रिश्ता आया है, लड़के का नाम नत्थाराम है और वो गंगानगर के बिजली विभाग में क्लर्क का काम करता है। परिवार भी ज्यादा लम्बा-चौड़ा नहीं है, केवल माता-पिता और पुत्र हैं। अमृता उस घर में बहुत सुखी रहेगी, पर रतनलाल को एक ही चिंता खाये जा रही थी कि लड़का अमृता से सोलह साल बड़ा यानी 30 साल का था। पर जानकी ने रतनलाल को समझाया कि ये सब तो हमारे समाज में आम बात है और आदमी कहाँ इतनी जल्दी बूढ़ा होता है। रतनलाल मान गया शादी की तारीख पक्की कर दी गई। घर में सब बहुत खुश थे। और छोटी सुधा को शायद शादी का मतलब भी न पता हो पर उसकी खुशी सबसे अलग थी। दीदी की शादी पर उसे नए कपड़े-लत्ते और ढ़ेर सारी मिठाईयाँ जो मिलने वाली हैं। धूम-धाम से शादी संपन्न हुई और अमृता ब्याह कर अपने ससुराल चली गई।

समय पंख लगाकर फिर उड़ने लगा। अमृता की शादी को आज सात साल हो गए पर उसका आँगन आज भी बच्चे की किलकारियों से सूना है। घर-परिवार से बाँझ का ताना सुनते-सुनते वो थक गई थी। देसी-अंग्रेजी हर तरह का ईलाज करवा लिया था परंतु सफलता नहीं मिली। अमृता सोच रही थी कि 'माँ की दो बेटियाँ ही सही पर बच्चे तो थे पर उसकी गोद तो कभी भरी ही नहीं। 'बच्चों के मोह ने बाबा को माँ के साथ जोड़े रखा था मेरा पति कब तक मुझ जैसी बाँझ के साथ जुड़ा रहेगा' बस यही चिंता उसे दिन रात खाये जा रही थी कि कहीं बच्चा न होने की वजह से उसका पति उसे छोड़कर किसी और से ब्याह न कर ले। अपनी इस चिंता की चर्चा अमृता ने अपनी माँ से की। उसकी माँ ने उसे उसकी चिंता का एक अनोखा हल दिया। माँ ने कहा 'क्यों न सुधा की शादी नत्था के साथ कर दी जाए'। अमृता ने कहा 'माँ ये तुम क्या कह रही हो, सुधा इनसे पच्चीस साल छोटी है, इनकी गोद में खेली है'। माँ ने कहा 'अगर तुम्हें तुम्हारा घर बचाना है तो यही उचित हल है'। 'नत्था ने अगर अमृता को घर से निकालकर किसी और से ब्याह कर लिया तो अमृता का क्या होगा'। यही सोचकर अमृता चुप हो गई। माँ ने कहा 'तेरे बाबा और सुधा को मैं समझा दूँगी'। अमृता तो अपने अंतर्मन से विरोध नहीं कर पाई। पर सुधा का अपने अंतर्मन से संघर्ष शुरू हो गया था। वह अपने पिता समान जीजे के साथ शादी नहीं कर सकती थी। पर जब अमृता ने उससे अपनी जिन्दगी की भीख मांगी तो सुधा को अपनी दीदी और माँ की जिद के आगे झुकना पड़ा। नत्था को ज्यादा मनाने और समझाने की जरूरत नहीं पड़ी। कम उम्र की दूसरी बीवी पाकर वो शायद खुश था और उससे ज्यादा मन में उम्मीद थी कि, अब उसका वंश जरूर आगे बढेगा। शादी के बाद भी सुधा का अपने अंतर्मन से विरोध जारी रहा। भाई और पिता समान जीजा को पति के रूप में स्वीकारना उसके लिए बहुत ही मुश्किल था। पर एक वक़्त के बाद उसने भी अपने सुनहरे सपनों को तोड़कर समाज की इस कुरीति के सामने आत्म-समर्पण कर दिया। सामाजिक दबाव में उसके अंतर्मन का विरोध मर गया।

वक़्त ने फिर उड़ान भरी। सुधा की शादी को आज सात साल हो गए पर उसकी भी गोद सूनी है। सारे देसी और अंग्रेजी इलाज हो गए पर सब असफल। और फिर पता चला कि नत्था को एक लाइलाज बीमारी हो गयी है। ग्वालियर रेलवे स्टेशन पर अपनी कहानी सुनाते-सुनाते सुधा की आँखें बार-बार भर आती थी। उम्र के इस पड़ाव पर आज तीनों अपने अंतर्मन से लड़ रहे थे। नत्था सोच रहा था कि मैंने दो लड़कियों की जिन्दगी बर्बाद कर दी, कमी मुझमें थी और बाँझ का ताना सारी जिन्दगी मेरी दोनों बीवियाँ सुनती रहीं। काश! 'मैंने सुधा से ब्याह करने की बजाय उसे अपनी बेटी बना लिया होता तो आज हमारी जिन्दगी कितनी खुशहाल होती, हम उसे पढ़ाते-लिखाते और वो हमारे बुढ़ापे का सहारा बनती'।

अमृता के अन्तर्मन में ये विरोध था कि उसने अपनी खुदगर्जी में अपनी बहन की जिन्दगी बर्बाद कर दी। बेटी जैसी बहन को सौतन का दर्जा दे दिया। सुधा के अन्तर्मन में यह विरोध था कि उसके जन्म के वक्त जैसे उसकी माँ ने एक फैसला लिया वैसे ही वो क्यों कोई फैसला नहीं कर सकी।

ग्वालियर स्टेशन पर उन तीनों को देखकर ऐसा लग रहा था कि जैसे वक्त ने तीनों को उम्र से पहले बड़ा कर दिया था और नत्था को वक्त से पहले बूढ़ा। कैसे सामाजिक परिवेश में दो जिन्दगियाँ खो गई। 'बाँझपन केवल औरत की समस्या नहीं है', न जाने लोग कब ये समझ पाएंगे। उन तीनों को देखकर एक ही ख्याल आ रहा था कि भारत चाहे कितनी ही तरक्की क्यों न कर ले पर जब तक यहाँ का हर इन्सान अपनी सोच से तरक्की नहीं करेगा हम सही मायने में कभी तरक्की कर ही नहीं सकते।

कहानी खत्म होते-होते साइबेरिया की उन चिड़ियों का शोर भी खत्म हो गया परन्तु मेरे मन में तूफान खड़ा कर गया। सुधा की सुर्ख आँखे और उन पक्षियों का भूरा रंग दोनों ही एक सवाल लिए हुए थे। सवाल ये कि 'क्या दोनों को कभी अपनी मंजिल मिलेगी'। जैसे कि उन पक्षियों में से पता नहीं कितनी अपने घर पहुँचेगी? उसी तरह बहन का घर बसाते-बसाते क्या कभी वो अपना घर बसा पायेगी। जाने कितना संघर्ष वो कर चुकी है और कितना अभी बाकी है।

पता नहीं सुधा को मेरे अंदर ऐसी कौन सी सच्चाई दिखी जो उसने मुझे अपनी ये कहानी सुनाई। मैं सोच रहा था कि अगर मेरी ट्रेन लेट न होती तो समाज की इस कुरीति की ये कहानी कभी मेरे सामने ही न आती। और जैसे उन तीनों के जीवन का संघर्ष मेरे अन्तर्मन का संघर्ष बन गया। अचानक ट्रेन का हॉर्न बजा, मेरी ट्रेन आई और मन में ये तूफान लिए मैं चल दिया।

सुरेन्द्र कुमार चौहान
पूर्व निदेशक

सहलेखिका: सुश्री कामना वर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

गौरैया

गौरैया पक्षी आकार में बहुत छोटी व चंचल होती है तथा इसको स्थानीय भाषा में चिड़िया भी कहते हैं। इसका जीवन काल 11 से 13 वर्ष का होता है। यह समुंद्र तल से 1500 फीट ऊपर तक पायी जाती है। यह न केवल एक पक्षी है अपितु किसानों का एक अच्छा मित्र है क्योंकि यह फसल को खराब करने वाले कीड़ों को खाती है।

गौरैया का नाम सुनते ही हमें बचपन याद आता है जब वह सुबह-सुबह अपनी मधुर चहचहाहट से हमें भोर का आभास कराती थीं। मानों ऐसा लगता था जैसे वो अपने मधुर स्वर से हमें सुबह-सुबह जगाने आयी हो जो आज के समय की कृत्रिम चेतावनी की कर्कश आवाज से कहीं ज्यादा मन-मुग्ध कर देने वाली थी। इसने भी लोगों के बीच रहना सीख लिया और इसने शहरों, कस्बों, नगरों व गांवों में हर जगह अपने घोंसले बना लिये तभी तो अंग्रेजी में इसे डोमेस्टिक बर्ड के नाम से जाना जाता है। मुझे याद है जब माँ अक्सर गेहूं सुखाने के लिए छत पर फैलाया करती थी तो नन्ही गौरैया फुदक-

फुदक कर उन दानों को खाने के लिए पूरी मंडली के साथ आ जाया करती थी| हम भी इसकी नटखट हरकतों को निहारा करते थे और मन में यही ख्याल आता था कि काश हम भी गौरैया होते! आज भी वो दिन याद आता है जब हम गौरैया के लिए दाना लेकर उसके पीछे-पीछे भागा करते थे और दाना खिलाने के लिए उसे अपने पास बुलाया करते थे और वो फुर्र से उड़ जाया करती थी। आज के समय की अपेक्षा पहले, लोगों का गौरैया के प्रति बहुत ही लगाव था और दूरदर्शन के कार्यक्रम में इस चिड़िया का गाना **'एक चिड़िया अनेक चिड़ियाँ, दाना चुगने आयी चिड़ियाँ'** प्रसिद्ध हुआ करता था।

वैसे तो गौरैया यूरोप व एशिया में अधिकांशतः पायी जाती है। ये वहीं अपना स्थान बनातीं हैं जहाँ मनुष्य का वास होता है तभी तो अन्य पक्षियों की अपेक्षा मनुष्य का इस पक्षी से विशेष लगाव रहा है। गौरैया की छह प्रजातियाँ पायी जाती हैं और यह पक्षी विश्व भर में पाया जाता है। लोग जहाँ भी घर बनाते हैं, देर-सवेर गौरैया के जोड़े वहां पहुँच ही जाते हैं। गौरैया बहुत ही छोटी और फुर्तीली होती है इसलिए वो सभी को आकर्षित करती है।

परन्तु आज इस मनलुभावन पक्षी की संख्या में भारी कमी देखी गयी है। इसकी कम होती संख्या एक बड़े चिंता का विषय बन चुकी है। आज मानव अपने स्वार्थ के कारण इस नन्ही गौरैया को विनाश की ओर लेता जा रहा है। जैसे-जैसे सुबह उठकर पक्षियों को दाना डालना व छत पर पक्षियों के लिए पानी भरकर रखने का प्रचलन ख़त्म होता गया वैसे ही इन पक्षियों की संख्या में भी कमी आती गयी। मनुष्य अपनी भाग दौड़ भरी जिन्दगी में खोता जा रहा है तो साथ ही साथ उसका प्रकृति से भी लगाव कम होता जा रहा है। जिस आँगन में प्यारी गौरैया की चहल कदमी हुआ करती थी, आज वो आँगन सूने पड़े हैं। गौरैया की चूं-चूं अब बस कुछ चंद घरों में सिमट कर रह गयी है मानो ऐसा लगता है जैसे कि आज नन्ही गौरैया कहीं खो गयी है|

आज के शहरी जीवन शैली में भी बहुत परिवर्तन आ गया है| पहले जहाँ नन्ही गौरैया को खुले मिट्टी के आँगन मिला करते थे, आज उनका स्वरुप बदल चुका है, उनकी जगह चमकदार टाइल्स फर्श ने ले ली है। घर की महिलायें भी अब छतों पर गेहूँ नहीं सुखाती हैं जिससे कि गौरैया दावत उड़ा सके। शहरों में प्रदूषण, विकिरण व खेतों में कीटनाशक के प्रयोग का सीधा प्रभाव इन पक्षियों के अस्तित्व पर पड़ा है। नन्हीं गौरैया की इस विलुप्तता को देखते हुए इस प्रजाति को बढ़ावा व इसकी संख्या में वृद्धि लाने का प्रयास किया जा रहा है। इसीलिए 20 मार्च, 2010 को गौरैया दिवस के रूप में

मनाया गया| हालांकि दिल्ली और बिहार राज्यों नें गौरैया को राजपक्षी का दर्जा दिया है। इन सबसे प्रभावित होकर कवि '**स्वानंद किरकिरे**' नें अपनी कविता के माध्यम से भाव प्रकट किया **"ओ री चिरइया, नन्हीं सी चिड़िया, अंगना में फिर आ जा रे"**। परन्तु अभी भी गौरैया के वजूद को बनाये रखने हेतु कोई भी ठोस कदम नहीं उठाये जा रहे हैं। यदि हम पुनः इसकी चहचहाहट को अपने आँगन में देखना चाहतें हैं तो हमें अपने घरों की छतों पर इसके लिए दाना-पानी की व्यवस्था करनी होगी ताकि हमारे आने वाली पीढ़ी भी इस नन्ही गौरैया की चंचलता को देख कर आनंदित हो सकें।

योगेश

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

लालच के पुजारी

इस देश के विकास वृक्ष को अथक परिश्रम से
सबने सींचा है,
अब लालच करके हमें ना करना इसका
गौरव नीचा है।
ऐ लालच के पुजारियों क्यों लगे हो इसको
बदनाम करने में,
उठा लो अपना बोरिया- बिस्तरा चुपके से
प्रस्थान करो।

'मुस्कान'

हैं ईश्वर की संतान सभी,
फिर क्यों विभेद-संग्राम करें।
क्षण-भंगुर है जीवन जब,
क्यों झूठा अभिमान करें।
हो गई बहुत ये भाग दौड़,
क्यों न तनिक विश्राम करें।
निहित स्वार्थ को त्याग कर,
परमार्थ का केवल काम करें।
अपमान न हो भूले से कभी,
श्रेष्ठों का सम्मान करें।
दया, दान और प्रेम सहित,
दुखियों में मुस्कान भरें।

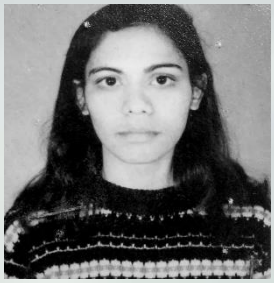

सुश्री नीलम मलिक
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

घर याद आता है

(घर से दूर नौकरी करने वालों को समर्पित)

घर जाता हूँ तो मेरा बैग ही मुझे चिढ़ाता है,
मेहमान हूँ, अब पल पल मुझे बताता है।
माँ कहती है सामान बैग में फ़ौरन डालो,
हर बार तुम्हारा कुछ ना कुछ छूट जाता है।
घर पहुँचनें से पहले ही लौटने का टिकट,
वक़्त परिंदों-सा उड़ता जाता है।
अंगुलियों पर ले जाता हूँ गिनती के दिन,
फिसलते हुए जाने का दिन पास आ जाता है।
अब कब आना होगा, सबका पूछना,
ये सवाल भीतर तक बिखराता है।
घर के दरवाजे से निकलने तक,
बैग में कुछ न कुछ भरते जाता हूँ।
जिस घर की सीढियाँ मुझे पहचानती थी ,
घर के चप्पे चप्पे में बसता था मैं,
अब लाइट्स-फैन के स्विच भूल जाता हूँ।
पास-पड़ोस जहाँ था बच्चा-बच्चा वाकिफ़,
बड़े-बुजुर्ग बेटा कब आया, पूछने चले आते हैं।
कब तक रहोगे अनजाने में, पूछ के वो,
घाव एक और गहरा कर जाते हैं।
ट्रेन में माँ के हाथ की बनी रोटियाँ,
रोती हुई आँखों में धुंधला जाता है ।
पत्नी की हाथों की खनकती चूड़ियाँ,
बच्चों की गूँजती किलकारियाँ,
अब बस याद बन कर रह जाते हैं।
लौटते वक़्त वजनी हुआ बैग,
सीट के नीचे पड़ा खुद उदास हो जाता है।
कार्यालय में उदासी भाव से करते ही कार्यभार ग्रहण,
बाहर जाने का टूर प्रोग्राम थमा दिया जाता है।
कभी इस नगर, कभी उस नगर,
लेखा परीक्षा करते करते कुछ समय बीत जाता है।
अब आती है, फिर छुट्टी लेने की बारी,

दिल सहम सा जाता है।
बड़ी हिम्मत के साथ छुट्टी अर्जी देते ही,
अधिकारी-गण का आँख भौं चढ़ जाता है।
क्या करें अधिकारी-गण, काम का बोझ बहुत ज्यादा है।
अर्जी स्वीकृत करें या ना करें,
बड़ी उलझन में पड़ जाते हैं।
आख़िरकार अधिकारीगण भी इसी दौर से गुजरे हैं ,
तुरंत मेरे मनःस्थिति समझ जाते हैं।
मन: स्थिति समझते ही, छुट्टी स्वीकृत हो जाती है,
और फिर बैग उठ जाता है।
तू एक मेहमान है, अब ये पल मुझे बताता है,
आज भी मेरा घर, वाकई बहुत याद आता है।

संजय कुमार कुशवाहा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरे अपने

क्यों याद आते हैं अपने,

हर पल अपने साथ रहने वाले, बन जाते हैं सपने।

क्यों हर पल याद आया करते हैं,

वक़्त बीतने पर जिन्हें हम भुला दिया करते हैं।

जाने वाले क्यों छोड़ देते हैं साथ हमारा,

बिना ये सोचे कि उनके बाद, क्या होगा हमारा।

तब भी हर दिन मेरा था, मेरे साथ मेरा परिवार था,

एक-एक करके छोड़ गए, ऐसा क्या दिल में भार था।

टूट के बिखर गए सब के सब, उनके जाने के बाद,

दिल में एक बोझ सा है, और कितनों का छूटेगा साथ।

जिनको महसूस किया करते थे, उन्हीं की कमी सताती है,

दिन पर दिन कटने पर, जिन्हें हर कदम पर जिंदगी भुलाती है।

सुख-दुःख जिनके साथ, मिलके सहे थे यहाँ,

ख़ामोशी भरी राहें चुन के गए वो कहाँ।

मेरे ऊँचे मक़ाम को देखने का था जिनका इरादा,

क्यों अपनी सांसों के साथ, तोड़ दिया उन्होनें वो वादा।

मेरी राहों से क्यों अपनी राहें चुरा ली उन्होंनें,

मुझसे अलग हो कर क्यों नई दुनिया बसा ली उन्होंनें ।

मैं तो सिर्फ इतना जानती हूँ, कि मैं भी चली जाऊंगी सबकुछ छोड़कर,

मेरी भी सांसे टूट जाएगी, ज़िन्दगी के किसी मोड़ पर ।

एक दिन मेरे परिवार से, फिर जा मिलूँगी मैं,

जो मेरे अपने थे, उन्हे फिर अपना बना लूँगी मैं।

छोड़ कर इस दुनिया को सबने जाना है,

मरने के बाद एक कफ़न ही तो सबको नसीब आना है।

मरने वाले तो मरने के बाद एक ही मौत मरते हैं,

रोज-रोज की मौत जिन्हें मिलती है,जिन्दगी में वो जिंदा लोग ही तडपते हैं।

जीवन के सफ़र में कुछ साथी खो जाते हैं,

कुछ रोज मरते हैं, कुछ एक बार में ही मौत के हो जाते हैं।

ऐसे अपनों के साए के पीछे भाग रही हूँ मैं,

जो कभी आ नहीं सकते,फिर भी उनके इंतजार में जाग रही हूँ मैं।

ये इंतजार खत्म होगा, उन्हें फिर मेरे साथ चलना होगा,

इस दुनिया में ना सही, इस जन्म में ना सही, कहीं तो अपना मिलना होगा।

मेरा परिवार मेरा था, है और रहेगा,

मर कर भी उनका साथ मेरे साथ था, है और रहेगा।

उनकी यादें मेरे लिए एक सौगात हैं,

मेरे जीवन के हर कदम पर उनका मेरा साथ है।

अपने जीवन से एक दिन अलविदा कहूँगी मैं भी,

जिनसे मिलने के लिए जिन्दा हूँ, मर कर उनसे मिलूँगी मैं भी।

शायद यही है जिन्दगी,

जो आज हैं वो कल नहीं, कभी नहीं।

सुश्री कामना वर्मा,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

देवी का मंदिर

श्रीधामपुर नाम की एक नगरी थी, उसमें धर्मशील नाम का राजा राज करता था। उसके दरबार में अन्धक नाम का एक दीवान था। एक दिन दीवान ने कहा, "महाराज, एक मंदिर बनवाकर देवी को स्थापित कर पूजा की जाए तो बड़ा पुण्य मिलेगा राज्य को।'' राजा ने ऐसा ही किया। एक दिन देवी ने प्रसन्न होकर उससे वरदान माँगने को कहा। राजा के कोई सन्तान नहीं थी। उसने देवी से पुत्र माँगा। देवी बोली, ''अच्छी बात है, तुम्हें बड़ा प्रतापी पुत्र प्राप्त होगा।'' कुछ दिन बाद राजा के यहाँ एक लड़का पैदा हुआ। सारे नगर में बड़ी खुशी मनायी गयी।

एक दिन एक धोबी अपने मित्र के साथ उस नगर में आया। उसकी निगाह देवी के मन्दिर में पड़ी। उसने देवी को प्रणाम करने का इरादा किया। उसी समय उसे मंदिर में एक धोबी की लड़की दिखाई दी, जो बड़ी सुन्दर थी। उसे देखकर वह इतना पागल हो गया कि उसने मन्दिर में जाकर देवी से प्रार्थना की, ''हे देवी! यह लड़की मुझे मिल जाए, और अगर मिल गयी तो मैं अपना सिर आप पर अर्पित कर दूँगा।''

इसके बाद वह धोबी हर घड़ी बेचैन रहने लगा। उसके मित्र ने उसके पिता से सारा हाल कहा। अपने बेटे की यह हालत देखकर वह दोनों की शादी की बात करने के लिए लड़की के पिता के पास गया और उसके अनुरोध करने पर लड़की का पिता दोनों का विवाह करवाने के लिए मान गया। विवाह के कुछ दिन बाद लड़की के पिता के यहाँ उत्सव हुआ और इस उत्सव में शामिल होने के लिए धोबी को न्यौता आया। अपने मित्र को साथ लेकर धोबी अपनी पत्नी के साथ नगर की ओर चल पड़े। नगर की तरफ जाते हुए रास्ते में देवी का मन्दिर मिला तो धोबी को अपना वायदा याद आ गया। उसने मित्र और पत्नी को थोड़ी देर रुकने को कहा और स्वयं मंदिर के अंदर जाकर देवी को प्रणाम किया और अपनी गर्दन पर तलवार इतने ज़ोर-से मारी कि उसका सिर धड़ से अलग हो गया। काफी देर हो जाने पर भी जब उसका मित्र मन्दिर के अन्दर गया, तो क्या देखता है! कि धोबी का सिर धड़ से अलग पड़ा है। यह देखकर उसने सोचा कि यह दुनिया बड़ी बुरी है, कोई यह तो समझेगा नहीं कि इसने अपने-आप शीश चढ़ाया है। सब यही कहेंगे कि इसकी सुन्दर स्त्री को हड़पने के लिए मैंने इसकी गर्दन काट दी। इससे कहीं मर जाना अच्छा है। यह सोचकर उसने तलवार लेकर अपनी भी गर्दन धड़ से अलग कर दी। उधर बाहर इंतजार कर- करके धोबी की पत्नी परेशान हो गयी तो वह मन्दिर के अंदर गयी। वहां अंदर का दृश्य देखकर वह आश्चर्यचकित रह गयी। सोचने लगी कि 'दुनिया क्या सोचेगी कि यह कितनी बुरी औरत है इसने दोनों को मार दिया', यह सोचकर इस बदनामी से बचने के लिए उसने तलवार उठाई और जैसे ही गर्दन पर मारनी चाही वैसे ही देवी ने प्रकट होकर उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, ''मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। जो चाहो, सो माँगो।'' स्त्री बोली, ''हे देवी! इन दोनों को ज़िंदा कर दो।'' देवी ने कहा, ''अच्छा, तुम दोनों के सिर उनके धड़ के साथ जोड़ दो।'' घबराहट में स्त्री ने सिर जोड़े तो गलती से एक का सिर दूसरे के धड़ पर लग गया। धड़ के जुड़ते ही दोनों मृत उठ खड़े हुए और अब वे दोनों आपस में झगड़ने लगे। धोबी कहने लगा कि यह स्त्री मेरी है और उसका मित्र भी यही कह कर उससे झगड़ने लगा कि यह स्त्री मेरी है। बताओ कि यह स्त्री किसकी है ?

तात्पर्य- कथावत है कि नदियों में गंगा उत्तम है, पर्वतों में सुमेरु, वृक्षों में कल्पतरु और अंगों में सिर्फ सिर उत्तम है। इसलिए जिस शरीर पर पति का सिर लगा हो, वही उस स्त्री का पति होगा।

श्री मनीष कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हिंदी भाषा

हिंदी शब्द सुनते ही प्रायः यह विचार मस्तिष्क में आता है कि, यह भाषा उत्तर भारत के राज्यों की है क्या? या यूं कहें कि हिंदी भाषा का नाम सुनते ही ऐसा लगता है कि हिंदी हमारी देश की भाषा है या इससे भी कुछ अधिक ? इस प्रश्न का उत्तर एकदम सही से दे पाना थोड़ा मुश्किल प्रतीत होता है। वस्तुतः कोई भी भाषा उस क्षेत्र या स्थान की पहचान के रूप में संस्कृति का अभिन्न अंग होती है जिसे हम उसकी अविछिन्न विशेषता भी कह सकते हैं। हरेक भाषा की अपनी एक पहचान होती है चाहे वह ज्यादा प्रचलित हो या न हो। अगर विश्वपटल पर देखा जाए तो हर एक देश चाहे वह विकसित, विकासशील या अविकसित हो वहां के निवासियों की पहचान उसकी अपनी मातृभाषा से ही ही जानी जाती है। भारत के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो हिंदी भाषा को भारत सरकार द्वारा भारत की राजभाषा के रूप में पहचान दी गयी है। हिन्दी का क्षेत्र विशाल है तथा हिन्दी की अनेक बोलियाँ (उपभाषाएँ) हैं। इनमें से कुछ में अत्यंत उच्च श्रेणी के साहित्य की रचना भी हुई है। ऐसी बोलियों में ब्रजभाषा और अवधी प्रमुख हैं। ये बोलियाँ हिन्दी की विविधता और सम्पन्नता दिखातीं हैं। ये उपभाषाएं हिन्दी की जड़ों को गहरा बनाती हैं। हिन्दी की बोलियों में प्रमुख हैं- अवधी, बृजभाषा, कन्नौजी, बुन्देली, बघेली, भोजपुरी, हरयाणवी, मालवी, झारखंडी, राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी, इत्यादि।

अब अगर हिंदी भाषा की बात करें तो यह ज्ञात होगा कि हिंदी भाषा भारत के उत्तरी क्षेत्र के राज्यों की यथा उत्तर प्रदेश, दिल्ली, मध्य प्रदेश इत्यादि में बोली जाने वाली क्षेत्रीय भाषा है तथा साथ ही साथ इन राज्यों की शासकीय कार्यों में प्रयोग की जाने वाली राजकीय भाषा है। हिंदी भाषा की व्यापकता भारतवर्ष के साथ-साथ विश्व पटल पर भी देखी जा सकती है। अगर बात देश के स्तर पर की जाए तो हिंदी की व्यापकता भारतवर्ष के हर कोने में देखी जा सकती है। गैर हिंदी भाषी राज्यों तथा दक्षिण भारतीय राज्यों नें हिंदी तथा हिंदी भाषियों को अपनी मातृभाषा के साथ-साथ स्वीकार किया है। लेखापरीक्षा दौरा कार्यक्रम के दौरान मेरा व्यक्तिगत अनुभव भी इस बात की पुष्टि करता है। गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक और केरल की यात्रा के दौरान मैंने महसूस किया कि इन राज्यों में इनकी मातृभाषा के साथ-साथ हिंदी तथा हिंदी भाषियों को उचित सम्मान मिलता है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक हिंदी की एक अलग पहचान हो गयी है। हिन्दी सिनेमा का उल्लेख किये बिना हिन्दी का कोई भी लेख अधूरा होगा। मुम्बई मे स्थित "बॉलीवुड" हिन्दी फ़िल्म उद्योग पर भारत के करोड़ो लोगों की धड़कनें टिकी रहती हैं। हर चलचित्र में कई गाने होते हैं। अब मोबाइल कंपनियां ऐसे हैंडसेट बना रही हैं जो हिंदी और भारतीय भाषाओं का समर्थन करते हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियां हिंदी जानने वाले कर्मचारियों को वरीयता दे रही हैं। हिंदी, विज्ञापन उद्योग की पसंदीदा भाषा बनती जा रही है। गूगल, अनुवाद, फोनेटिक टूल्स, गूगल सहायक आदि के क्षेत्र में नई नई खोज कर अपनी सेवाओं को बेहतर कर रहा है। हिंदी और भारतीय भाषाओं की पुस्तकों का डिजिटलीकरण जारी है। और अगर विश्व परिवेश में देखा जाए तो वर्तमान समय में हिंदी, हिंदी साहित्य और हिंदी से जुड़ी हुई हस्तियों को उचित सम्मान दिया जा रहा है। हॉलीवुड की फिल्में हिंदी में ध्वनित हो रही हैं और हिंदी फिल्में देश के बाहर देश से अधिक कमाई कर रही हैं। अंग्रेजी फिल्मों [जैसे कि अवतार (निर्देशक- जेम्स कैमरून)] का नाम भी हिंदी भाषा से लिया जा रहा है जिससे यह पता चलता है कि हिंदी के शब्दों का

प्रयोग विश्व स्तर पर भी किया जा रहा है। हिंदी भाषा को सिखाने के उद्देश्य से दुनिया के कई देश हिंदी साहित्य के जाने माने विशेषज्ञों की मदद भी ले रहे हैं।

हिंदी भाषा की सार्थकता, उपयोगिता एवं प्रचार-प्रसार हेतु भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा एक सराहनीय कदम उठाया गया है। भारत सरकार के राजभाषा अधिनियम 1963, एवं 1976 द्वारा हिंदी भाषा को राजभाषा के रूप में अंगीकृत करते हुए सभी सरकारी कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों, बीमा कंपनियों, निगमों, बोर्डों एवं संगठनों में राजभाषा हिंदी का अनुपालन सुनिश्चित किया गया है। निस्संदेह हिंदी का प्रचार-प्रसार राजभाषा विभाग द्वारा किये जाने पर इसकी व्यापकता बढ़ेगी और भारत के साथ-साथ विश्वपटल पर भी हिंदी की छवि और निखरेगी। हिंदी के प्रति निष्ठा, हिंदी के प्रति ज्ञान के प्रोत्साहन हेतु और अपनी सृजनात्मकता के परिचय हेतु राजभाषा विभाग द्वारा एक और सकारात्मक और सराहनीय क़दम हिंदी पखवाड़े के रूप में प्रतिवर्ष 14 सितम्बर से 28 सितम्बर तक मनाया जाता है।

राजीव कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

उत्तिष्ठत जाग्रत

प्राप्य वरान्निबोधत।

क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया

दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति?

॥ कठोपनिषद् ॥

भावार्थ

"उठो, जागो, वरिष्ठ पुरुषों को पाकर उनसे बोध प्राप्त करो।

छुरी की तीक्ष्ण धार पर चलकर उसे पार करने के समान दुर्गम है यह पथ

-ऐसा ऋषिगण कहते हैं।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

आखिर हमें बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के इस अभियान की जरूरत क्यों पड़ी? जाहिर है इसके पीछे कन्या भ्रूण हत्या के कारण देश में तेजी से घटता लिंगानुपात है जिसके कारण अनेक सामाजिक समस्याएं समाज में उत्पन्न हो रही है। आखिर कन्या भ्रूण हत्या क्यों की जाती है? इसके पीछे छुपी मानसिकता क्या है? इसके क्या खतरे हैं? और इसका समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? तथा कैसे इस समस्या का निदान किया जा सकता है।

मैं माताओं से पूछना चाहता हूं कि गर बेटी नहीं पैदा होगी तो बहू कहां से लाओगे? हम जो चाहते हैं, समाज भी वही चाहता है। हम चाहते हैं कि बहु पढ़ी-लिखी मिले, पर बेटी को पढ़ाने के लिए हम तैयार नहीं होते आखिर यह दोहरापन कब तक चलेगा। इसीलिए बेटियों के अस्तित्व को बनाये रखने के उद्देश्य हेतु भारत सरकार ने 2015 में हरियाणा के पानीपत से **बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ** अभियान की शुरुआत की है।

प्रसिद्ध स्मृतिकार महर्षि मनु ने तो अपनी विश्वविख्यात कृति मनुस्मृति में लिखा है, जहां नारियों का सम्मान होता है वहां देवताओं का निवास होता है, परंतु वर्तमान में इसके एकदम विपरीत स्थिति हो रही है क्योंकि पहले तकनीक नहीं थी इसलिए कन्या शिशु को जन्म लेने के बाद मार दिया जाता था, किंतु अब तकनीक के विकास के कारण कन्या भूर्ण को गर्भ में ही मार दिया जाता है।

यदि हम एक दूसरे नजरिए से देखें तो कन्या भ्रूण हत्या से भारत की उस महिला शक्ति का विनाश हो रहा है जो वर्तमान में भारत को आर्थिक और सामाजिक रुप से समृद्ध कर सकती है। इसी कारण भारत सरकार लंबे समय से बेटी को बचाने के लिए प्रयत्नशील रही है और लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने के लिए अनेक कदम उठा रही है। सरकार द्वारा देश में कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए अनेक तरह से जागरूकता पैदा करने पर जोर दिया जा रहा है।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत राष्ट्रीय निरीक्षण और निगरानी समिति का पुनर्गठन किया गया और अल्ट्रासाउंड संबंधी सेवा समिति द्वारा बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा, मध्य प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, राजस्थान, गुजरात और उत्तर प्रदेश में निगरानी का कार्य किया गया। जिसके कारण कन्या भ्रूण हत्या के आंकड़ों में गिरावट देखी गयी है।

नईम अहमद
लेखापरीक्षक

स्त्री

लड़की हुई , मातम मना,

क्यूँ नहीं तूने लड़का जना,

ताने सहे, लाठी सही, क्यूँ सहा अपमान,

क्यूँ नहीं पहुँचा दिया, मुझे उसी वक़्त श्मशान।

इन छोटे हाथों में जब पकड़ा दी झाड़ू,

भाई बैठा था गोद में तेरी, बनकर तेरा लाड़ू,

मैं रोई थी, वो हँसा, बढ़ गया उसका अभिमान,

क्यूँ नहीं पहुँचा दिया, मुझे उसी वक़्त श्मशान।

बड़ी हुई, दृढ़ किया, करूँ कुछ ऐसा काम,

माँ-बाप लगा ले गले से, कर जाऊँ तेरा नाम,

शादी कर पराया किया, मार दिये सारे अरमान,

क्यूँ नहीं पहुँचा दिया, मुझे उसी वक़्त श्मशान।

दहेज कम था, ससुराल ने दिया था मुझे झंझोर,

लात, रस्सी, आग, मौत दिखी मुझे चहुँ ओर,

मायके भागी, समाज के तानों से मर गया मेरा आत्मसम्मान,

क्यूँ नहीं पहुँचा दिया, मुझे उसी वक़्त श्मशान।

लेने को पति आया बन कर फिर पाखण्डी,

फिर सजी मैं जैसे दुल्हन, लगा माथे पर बिंदी,

मन में डर था, सामने नर्क, नहीं था कोई ज्ञान,

क्यूँ नहीं पहुँचा दिया, मुझे उसी वक़्त श्मशान।

सासू के ताने, ननद का नक्सा, तन पर साड़ी सूती,

दिन भर करके काम बनूं मैं रात को पति की जूती,

श्राप है, मुसीबत है, कैसा है ये इम्तिहान,

क्यूँ नहीं पहुँचा दिया, मुझे उसी वक़्त श्मशान।

वक़्त गुज़रा, माँ बनी, मिला ख़ुशी का कारण,

किलकारी सुनी, फूल गई, बंजर पर जैसे सावन,

बेटी हुई , मातम मना, अब मैंने कर दिया ऐलान,

मेरी बेटी नहीं जाएगी, अब कोई श्मशान।

हमने ही तो दब-दब कर पैदा किए हैं रावण,

बेटा भी तो, बड़ा होता है, पकड़कर माँ का दामन,

क्यूं करता है तू स्त्री का पग-पग पर अपमान,

मेरी बेटी नहीं जाएगी, अब कोई श्मशान।

झाँसी की रानी के क़िस्से गाए जाते हैं घर-घर,

पाकिस्तान ने दे दिया बांग्लादेश, इंदिरा जी से डर कर,

कल्पना ने पहुँच अंतरिक्ष, सिखाया देश को विज्ञान,

मेरी बेटी नहीं जाएगी, अब कोई श्मशान।

अग्नि परीक्षा देकर भी, माँ सीता भटकी थी वन-वन,

जहाँ मौक़ा मिला, वहाँ बन गए दुःशासन,

दहेज, परदा, बलात्कार, सती, फिर माँ का वरदान,

मेरी बेटी नहीं जाएगी, अब कोई श्मशान।

महाभारत का युद्ध करा दिया द्रोपदी ने दुर्योधन पर हँसकर,

शक्ति की भीख माँगने जाते काली, दुर्गा के दर पर,

स्त्री की शक्ति से तुच्छ मर्द, है तू अनजान,

मेरी बेटी नहीं जाएगी, अब कोई श्मशान।

स्त्री पर हाथ उठाए, वो मर्द नहीं नपुंसक है,

स्वतंत्रता से जीने का स्त्री का भी पूरा हक़ है,

आदर करो, प्यार करो, करो बराबर का योगदान,

चलो ऐसा बना दें भारत, ना जाए कोई श्मशान।

निखिल देव बजाज
लेखाकार

परिश्रम का महत्व

परिश्रम का अर्थ मनुष्य के लिए वही महत्व रखता है जो उसके लिए खाने और सोने के लिए। बिना परिश्रम का जीवन व्यर्थ होता है क्योंकि प्रकृति द्वारा दिए गए संसाधनों का उपयोग वही कर सकता है जो परिश्रम पर विश्वास करता है। परिश्रम अथवा कर्म का महत्व भगवान् श्रीकृष्ण ने भी अर्जुन को गीता के उपदेश द्वारा समझाया था। उनके अनुसार "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन:" अर्थात परिश्रम ही मनुष्य की वास्तविक पूजा अर्चना है। इस पूजा के बिना मनुष्य का समृद्ध होना अत्यंत कठिन है।

वह व्यक्ति जो परिश्रम से दूर रहता है अर्थात कर्महीन, आलसी व्यक्ति सदैव दुखी व दूसरों पर निर्भर रहने वाला होता है। परिश्रमी व्यक्ति अपने कर्म के द्वारा अपनी इच्छाओं की पूर्ति करते हैं। उन्हें जिस वस्तु की आकांक्षा होती है उसे पाने के लिए रास्ता चुनते हैं। ऐसे व्यक्ति मुश्किलों व संकटों के आने से भयभीत नहीं होते बल्कि उस संकट के निदान का हल ढूँढ़ते हैं। अपनी कमियों के लिए वे दूसरों पर लांछन या दोषारोपण नहीं करते। दूसरी ओर कर्महीन अथवा आलसी व्यक्ति सदैव भाग्य पर निर्भर होते हैं। अपनी कमियों व दोषों के निदान के लिए प्रयास न कर वह भाग्य का दोष मानते हैं। वह भाग्य के सहारे रहते हुए जीवनपर्यंत कर्म क्षेत्र से भागता रहता है। वह अपनी कल्पनाओं में ही सुख खोजता रहता है, परंतु सुख किसी मृगतृष्णा की भाँति सदैव उससे दूर बना रहता है।

किसी ने सच ही कहा है कि परिश्रम सफलता की कुंजी है। आज यदि हम देश-विदेश के महान और सुविख्यात पुरुषों अथवा स्त्रियों की जीवन शैली का आकलन कर देखें तो हम यही पायेंगें कि जीवन में इस ऊंचाई या प्रसिद्धि के पीछे उनके द्वारा किये गए सतत अभ्यास व परिश्रम का महत्वपूर्ण योगदान है।

अमेरिका, चीन, जापान आदि विकसित देश यदि उन्नत देशों में है तो इसलिए कि वहाँ के नागरिकों ने अथक परिश्रम किया है। द्वितीय विश्वयुद्ध में भारी नुकसान के बाद भी आज यदि जापान ने विश्व जगत में अपना विशिष्ट स्थान बनाया है तो उसका प्रमुख कारण यही है कि वहां के लोगों में दृढ इच्छाशक्ति व अथक परिश्रम की भावना कूट कूट कर भरी हुई है। परिश्रमी व्यक्ति ही किसी समाज में अपना विशिष्ट स्थान बना पाते हैं। अपने परिश्रम के माध्यम से ही कोई व्यक्ति भीड़ से उठकर एक महान कलाकार, शिल्पकार, अभियंता, चिकित्सक अथवा एक महान वैज्ञानिक बनता है। परिश्रम पर पूर्ण आस्था रखने वाले व्यक्ति ही प्रतिस्पर्धाओं में विजयश्री प्राप्त करते हैं। किसी देश में नागरिकों की कर्म, साधना और कठिन परिश्रम ही उस देश व राष्ट्र को विश्व के मानचित्र पर प्रतिष्ठित करता है।

विश्वास करो, यह सबसे बड़ा देवत्व है कि तुम पुरुषार्थ करते मनुष्य हो और मैं स्वरुप पाती मृत्तिका।

अतः उन्नति, विकास और समृद्धि के लिए यह आवश्यक है कि सभी मनुष्य परिश्रमी बनें। परिश्रम वह कुंजी है जो साधारण से साधारण मनुष्य को भी विशिष्ट बना देती है। परिश्रमी लोग सदैव प्रशंसा व सम्मान पाते हैं। वास्तविक रूप में उन्नति और विकास के मार्ग पर वही व्यक्ति अग्रसर रहते हैं जो परिश्रम से नहीं भागते। भाग्य का सहारा वही लोग लेते हैं जो कर्महीन हैं। अतः हम सभी को परिश्रम के महत्व को स्वीकारना और समझना चाहिए तथा परिश्रम का मार्ग अपनाते हुए स्वयं का ही नहीं अपितु अपने देश और समाज के नाम को ऊँचाइयों पर ले जाना चाहिए।

सचिन कुमार , लेखापरीक्षक

कोशिश कर, हल निकलेगा

कोशिश कर, हल निकलेगा,

आज नहीं तो कल निकलेगा।

अर्जुन के तीर सा सध,

मरुस्थल से भी जल निकलेगा।

मेहनत कर, पौधों को पानी दे,

बंजर जमीन से भी फल निकलेगा।

ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे,

फौलाद से भी बल निकलेगा।

जिन्दा रख, दिल में उम्मीदों को,

गरल के समन्दर से भी गंगाजल निकलेगा।

कोशिशें जारी रख कुछ कर गुजरने की,

जो है आज थमा सा, चल निकलेगा।

संजीव कुमार
वरिष्ठ लेखाकार

यात्रा वृतांत

ये बात नवंबर, 2015 की है , जब मैं अपने परिवार के साथ दीपावली मनाने के लिए हैदराबाद से अपने घर दिल्ली आ रहा था। शुक्रवार का दिन था, ट्रेन के चलने का समय शाम 06:55 बजे का था। मैंने जल्दी से खाने का सामान (जो हो सका क्योंकि मेरी यही कोशिश रहती थी कि जितना हो सके ट्रेन के खाने को न खाया जाए) साथ लिया और करीब 06:15 बजे कमरे से स्टेशन की तरफ निकल पड़ा।

शाम करीब 06:45 बजे मैं सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन के फ्लेटफॉर्म नंबर 10 से दिल्ली जाने वाली ट्रेन संपर्क क्रांति एक्सप्रेस के शयनयान डिब्बे में चढ़ा। दीपावली की वजह से शयनयान वर्ग में प्रतीक्षा-सूची टिकट वालों की वजह से बहुत भीड़ थी। शयनयान वर्ग की हालत सामान्य डिब्बे जैसी हो रखी थी। मेरी टिकट भी 2 महीने की प्रतीक्षा के बाद ऐन वक़्त पर ही पक्की हुयी थी। ट्रेन में चढ़ते ही बगल की निचली जगह मेरी ही थी। वहाँ पहले से ही 2-3 लोग बैठे थे। मैंने उनको जगह देने के लिए अनुरोध किया। आधी जगह छोड़कर दो लोग थोड़ा आगे सरक गए और एक शख्स खड़ा हो गया और जैसे तैसे मैंने अपने बैग समायोजित किये और थोड़ी सी बची जगह में बैठ गया। करीब 08:00 बजे वो दोनों शख्स भी उठ कर चले गए और उनके उठते ही एक और शख्स आकर मेरी सीट पर बैठ गया। मुझे अंदेशा था कि कहीं कोई रात भर मेरी आधी सीट पर बैठा रहा तो मैं सही से सो भी नहीं पाऊंगा। क्योंकि मेरे जैसे 6 फ़ीट के व्यक्ति को 3 फ़ीट की जगह पर अनुकूलन करना पड़े, वो भी तब, जब आप ऑफिस से सीधे ट्रेन में आ रहे है और थके हुए हों, तो यह बहुत ही मुश्किल हो जाता है। इसी वजह से मुझे 2014 की दीपावली का वाकया याद आ गया, जब मेरी प्रतीक्षित टिकट पक्की नहीं हुई थी और मुझे "आरएसी" मतलब बगल की निचली जगह का आधा हिस्सा मिला था। मैं पूरी रात सो नहीं पाया था। मेरे पैरो में दर्द भी हो गया था। इसी वजह से मैंने उस शख्स को बोल दिया कि थोड़ी देर में उठ जाना क्योंकि मुझे सोना है। उसने बोला ठीक है मैं उठ जाऊँगा। और करीब 9 बजे मैंने खाना खाया और फिर वह शख्स, जिसका नाम समीर था, से मेरी बातचीत शुरू हुई। हैदराबाद से दिल्ली के 1 दिन से ज्यादा के सफर में अनजान लोगों से बातचीत हो ही जाती है और इतने बड़े सफर को आप गाने सुनकर या पुस्तक पढ़कर भी तय नहीं कर सकते।

बस फिर बातें शुरू हुई तो कब रात के 11:00 बज गये, पता ही नहीं चला। इस दौरान समीर ने बताया उसकी पत्नी अस्पताल में प्रसव पीड़ा की वजह से भर्ती है और जैसे ही उसको यह बात पता चली, वो सीधा स्टेशन आ गया और प्रतीक्षा सूची टिकेट लेकर ट्रेन में चढ़ गया। उसने बताया कि वो हैदराबाद की हाई-टेक सिटी की बहुराष्ट्रीय वित्तपोषण कंपनी में नौकरी करता है। उसने बोला कि वो हवाई उड़ान की टिकट भी करा सकता था लेकिन सही समय पर कोई उड़ान न होने की वजह से उसने रेलगाड़ी में सफर करने का फैसला लिया। उसने कहा कि ये रेलगाड़ी भी उसने ऐन वक़्त पर पकड़ी है और सिर्फ एक चादर बैग में ली है, जिसको वो रेलगाड़ी में कहीं बिछा कर सो जायेगा। समीर को रोहतक, हरियाणा तक जाना था। अपने आने वाले बच्चे को लेकर उसके चेहरे पर अलग ही ख़ुशी थी। उसने बताया कि उसे दौड़ में हिस्सा लेना बहुत पसंद है। कुछ ही दिनों पहले हैदराबाद में हुई 5 किलोमीटर की दौड़ में मिला पदक वो थैले में साथ लेकर जा रहा था। उसने बताया उसके पास ऐसे बहुत से पदक हैं। इन पदक को वो अपने भतीजे को दिखाने वाला है क्योंकि उसने वह पदक लाने के लिए बोला है। मैंने भी समीर को बोला कि 5 किमी की दौड़ के लिए भविष्य में वो मुझे भी बताये। उसने बोला ठीक है। वो चाहता था कि **मिलिंद सोमन** की तरह वो भी एक दिन **लौह पुरुष** का ख़िताब हासिल करे। बातों-बातों में मुझे नींद आने लगी और मैं आधी सीट पर ही अपने पैरों को मोड़

कर सो गया। समीर बगल की दूसरी सीटों पर बैठे और लोगों से बातें करने लगा और उनको भी बताया कि वो किसलिए घर जा रहा है। ये सफर भी 2014 की तरह ही रहा क्योंकि समीर आधी बची सीट पर ही सो गया। मैंने सोचा दिन में अच्छे से नींद पूरी करुँगा क्योकि रेलगाड़ी को शाम 6 बजे दिल्ली के हज़रत निजाम्मुद्दीन रेलवे स्टेशन पहुँचना था।

सुबह हुई, और फिर बातों का सिलसिला शुरू हुआ। समीर बातों का बहुत धनी था। उसने बताया कार्यालय की तरफ से वो दो बार यूरोप होकर आ चुका है। उसने यूरोप की अपनी कुछ छवियाँ भी दिखाई। बातों का सिलसिला यूँ ही चलता रहा। बीच-बीच में वो अपनी माताजी से बात भी करता रहा जो उसकी पत्नी के साथ अस्पताल में थीं। दिल्ली पहुँचने में रेलगाड़ी 2 घंटे की देरी से चल रही थी। समीर घर पहुँचने के लिए इतना उत्सुक था कि रेलगाड़ी के दरवाजे पर बार-बार आ-जा रहा था। जैसे-जैसे दिल्ली नजदीक आ रही थी, वो मोबाइल पर उतना ही व्यस्त होता जा रहा था। लेकिन अचानक सब बदल गया। रेलगाड़ी के दिल्ली पहुँचने से करीब एक-डेढ़ घंटा पहले वो चुप सा हो गया और सीट पर आकर चुपचाप बैठ गया। अब वो पहले की तरह बातें नहीं कर रहा था। मैंने ज्यादा गौर नहीं किया। समीर थोड़ी देर के लिए सीट से उठकर कहीं चला गया लेकिन इस बार वो मोबाइल पर बात करने के लिए नहीं गया था। इसी दौरान सामने वाली सीट पर बैठे लड़के से मेरी बात हुई तो मैंने बोला समीर को घर पहुंच कर सरप्राइज मिलने वाला है क्या ? उसने बोला सरप्राइज तो मिल गया, समीर बाप बन गया है, उसकी पत्नी के बेटी हुई है। मैंने पूछा, तुम्हें कैसे पता ? उसने बताया कुछ देर पहले समीर अपनी माताजी से मोबाइल पर बात कर रहा था तब मैं भी वहीं था तो यह बात मुझे पता चली। मैं हैरान हो गया कि पिछले 24 घण्टे से मेरे साथ सफर करने वाले समीर ने मुझे ये बात नहीं बताई। जैसे ही समीर सीट पर आया मैंने बोला भाई तुमने बताया नहीं कि तुम पापा बन गए ! उसने बोला-मुझे ध्यान नहीं रहा बताने का। खैर, मैंने उसको बधाई दी और जश्न मनाने की बात भी कही। कुछ ही पल में हम निजाम्मुद्दीन स्टेशन पहुंच चुके थे। फिर करीब 10-15 दिन बाद मेरी समीर से बात हुई। उसने बताया कि उसकी वाइफ और बेटी दोनों स्वस्थ है। उसने व्हाट्सप्प पर अपनी प्यारी सी बेटी की छवि भी मुझे साझा की। उसके बाद एक बार और समीर से बात हुई कि वो आंध्र प्रदेश के वारंगल ज़िले में 10,000 मीटर की दौड़ में हिस्सा लेने जा रहा है, मैंने कहा आना तो मैं भी चाहता हूँ लेकिन इस बार नहीं। इसके बाद कभी मेरी समीर से बात नहीं हुई।

जय प्रकाश
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सीधे सवाल उल्टे जबाव

1. एक आदमी की छह उंगलियाँ थीं। सब लोग उसे अकबर बुलाते थे, क्यों।

2. एक बी (BEE) जो कि अमेरिका से आयी है, उसे क्या बुलायेंगे ?

3. आप **'She is calling a Cab'** शब्द को क्या कहेंगे।

4. किस पाकिस्तानी क्रिकेटर की उम्र का पता नहीं लग सकता।

युवानी मदान
(सुपुत्री- श्री तिलक राज, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)

उत्तर: १. क्योंकि उसका नाम 'अकबर' था, २. USB, ३. VOCABULARY, ४. उमर गुल

बूझो तो जानें

1. आगे-पीछे काला जंगल, सफेद मैदान,
   एक दुकान, दुकान के नीचे एक गुफा,
   गुफा की एक रानी और उसके सफ़ेद सिपाही।
2. घूमती है गोल,
   चलती है गोल और वो है गोल।
3. एक थाल मोती भरा,
   सबसे ऊपर उल्टा पड़ा।
4. मैं ही कटा, मैं ही मरा,
   तुम क्यों रोये ?
5. बीसों का सर काट दिया,
   न मारा न खून किया।
6. एक गाय लकड़ी खाती,
   पानी पीते ही मर जाती।
7. दो भाई, दोनों एक सामान,
   एक खोएं तो दूजा न आये काम।
8. दिन में सोए, रात में रोए,
   जितना रोये, उतना खोये।
9. राजा रानी सुनो कहानी,
   सफ़ेद घड़े में दो रंग का पानी
10. तीन अक्षर का मेरा नाम,
    उल्टा सीधा एक समान।
    आता हूँ उड़ने के काम,
    जान सके तो मुझको जान।

ईहा मदान
(सुपुत्री- श्री तिलक राज, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)

उत्तर: १. मुख २. पृथ्वी ३. आकाश ४. प्याज ५. नाखून ६. आग ७. जूते ८. मोमबत्ती ९. अंडा १०. जहाज।

पिता

बच्चे के जन्म लेते ही उसके जीवन के दो आधार स्तम्भ होते है जिन्हें माँ और पिता की संज्ञा दी गयी है। ये वो आधार स्तम्भ है जिन पर बच्चे का पूरा जीवन निर्भर होता है। माँ और पिता के बिना तो जीवन की कल्पना भी कोरी सी लगती है। वस्तुतः माँ का दर्जा भगवान से बड़ा तथा पिता का दर्जा आकाश से भी ऊँचा दिया गया है। माँ की ममता तथा पिता का स्नेह दुनिया की सबसे अमूल्य दौलत है जिसे किसी अन्य जगह से प्राप्त नही किया जा सकता है। माँ और पिता बच्चे के जीवन की दिशा और दशा तय करते है और अपने बच्चों को दुनिया की हर ख़ुशी देने का अथक प्रयास करते है।

माँ और उसकी ममता के बारे में बहुत सारा लिखा और पढ़ा गया है परन्तु पिता के बारे में माँ की अपेक्षाकृत कुछ कम ही साहित्यिक रचनायें देखने, सुनने और पढ़ने को मिलते है। अतएव, आज मै 'माँ' जिसका स्थान दुनिया में सर्वोच्तम है और कोई भी उसका स्थान नही ले सकता, के बारे में ना लिखकर पिता पर चंद बातें कहने का छोटा सा प्रयास करूंगा।

पिता शब्द सुनते ही प्रायः ही एक विचार मन में आता है कि 'पिताजी है तो सबकुछ ठीक है और कोई चिंता की बात नही है'। पिता शब्द सुनते ही मस्तिष्क में एक जिम्मेदार, प्रयत्नशील व्यक्ति की छवि सी उभर आती है और दिलो दिमाग से यही आवाज़ बाहर आती है कि चलो पिताजी संभाल लेंगे। बच्चे अपने पिता की उंगली पकड़कर चलना सीखता है और कंधे पर बैठकर दुनिया से रूबरू होता है। एक छोटा बच्चा अपने पिता का इंतजार वैसे से ही करता है जैसे कि एक चिड़िया अपने घोंसले मे जब शाम को वापस आती है तो उसके बच्चे शोर करते हुए अपने माँ के आँचल से लिपट जाते है। शाम को जब ड्यूटी समाप्त करके एक पिता अपने घर जाता है तब बच्ची जो पिता का मतलब भी नहीं जानती, पापा-पापा करके अपने पिता से लिपट जाती हैं और पिता भी उसकी खुशी देखकर आत्ममुग्ध हो जाता है। एक पिता जो अपने बच्चों और परिवार के लिए ताउम्र मेहनत करता है और यही आशा रखता है कि उसके बच्चे पढ़ लिख कर एक अच्छे नागरिक बने। पिता का दिल इतना कठोर नही होता जितना कि उसके बच्चे उसको समझते है। एक पिता अपने बच्चो को सही शिक्षा और संस्कार के इरादे से अपने दिल पर पत्थर रखकर और अपना दिल मजबूत करके बच्चों को डांटता और समझाता है। बच्चे समझते है कि पिता हमारे लिये एक खलनायक की भूमिका अदा करते हें अपितु ऐसा नही है। पिता तो अपने बच्चों को हमेशा से ही सही शिक्षा देने का प्रयास करते हैं और जिंदगी जीने के सही मायने समझाते है। एक पिता अपने बच्चों और परिवार के लिए जिंदगी भर कमाकर धीरे- धीरे बुढ़ापे की ओर कदम रखता है और एक समय ऐसा भी आता है जब वह अपने बुढ़ापे की अवस्था देखकर अपने शेष बचे हुए जीवन में व्यस्त हो जाता है।

पिता जो कि एक जिम्मेदारियों से भरा हुआ शख्स जिन्दगी के खट्टे-मिठ्ठे अनुभव रखता है। पिता एक ऐसे वृक्ष की तरह है जब वह कमाता है तो वह अपने बच्चों और परिवार को फल देता है और जब बूढ़ा होकर किसी खाट पर बैठा होता है तो फल नहीं अपितु ऐसी छाया प्रदान करता है जिसकी जरूरत उसके बच्चों को सदैव होती है। पिता अपने जीवन में अनुभव किए गए अच्छे-बुरे अनुभवों से अपने बच्चों को सही राह दिखाते है। वस्तुतः यह कहा भी गया है कि मनुष्य उम्र से नहीं अपितु अनुभवों से बड़ा होता है।

पिता का स्थान आकाश से भी ऊँचा इसलिए रखा गया है कि बच्चे के सपने को पूरा करने में उसके पिता का सहयोग नितान्त आवश्यक है। एक पिता के बिना अपने सपनों को उड़ान देना एक कोरी कल्पना सी प्रतीत होती है और तब यह ओर भी असहज और मुश्किल हो जाता है जब पिता का साया सिर से उठ जाता है। उस समय तो ऐसा लगता है हमारे ऊपर से आसमान ही खिसक गया हो और खाली-खाली सा लगने लगता है। पिता का स्थान दुनिया में कोई और भी व्यक्ति शायद ही ले सकता है क्योंकि जो स्नेह, लाड़-प्यार, डाँट-फटकार, दुलार उनसे मिलता है वह अन्यत्र से प्राप्त होना असंभव सा प्रतीत होता है। पिता का साया नहीं होने पर दुनिया में बहुत कुछ अधूरा सा लगता है, मन बेचैन हो उठता है आँखे भर आती है और वो सारी जिन्दगी भर के सुखद एहसास और उनके साथ बिताये गए अमूल्य पलों की यादें ताजा हो जाती है और दिल बार-बार यही पुकारता है कि काश! पिता जी होते।

राजीव कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सत्यमेव जयते नानृतं
सत्येन पन्था विततो देवयानः ।
येनाऽऽक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा
यत्र तत् सत्यस्य परमं निधानम् ।।

।। मुण्डकोपनिषद् ।।

भावार्थ

(अर्थात अंततः सत्य की ही जय होती है न कि असत्य की।
यही वह मार्ग है जिससे होकर आप्तकाम (जिनकी कामनाएं पूर्ण हो चुकी हों)
मानव जीवन के चरम लक्ष्य को प्राप्त करते हैं।)

हाँ, क्योंकि मैं हूँ रेलगाड़ी

हाँ, क्योंकि मैं हूँ 'रेलगाड़ी'।

मेरे जन्मदाता थे रिचर्ड जिन्होंने 18वीं शताब्दी में मेरा अविष्कार किया। तब से अब तक मैंने लकड़ी से स्टील तक का सफ़र तय किया। भारत में मैंने पहला कदम सन्1853 ईस्वी में ब्रिटिश शासन काल में रखा। यहाँ मैंने अपने प्रति लोगों का उत्साह देखा। भारत में मेरा सफ़र बहुत रोमांचक व दिलचस्प रहा। कभी दिल खुश कर देने वाले नज़ारे को, तो कहीं आँख भर जाने वाले दृश्य को देखा। मैंने पथ के यात्रियों को उनकी मंजिल तक पहुंचाया। मैंने भारत में उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक का सफ़र तय किया । इस दौरान मैंने पथरीले, समतल व पर्वतीय रास्तों का सफ़र तय किया। हाँ, क्योंकि मैं हूँ 'रेलगाड़ी'।

हालांकि, मुझे मीलों का सफ़र तय करना अच्छा लगता है, परन्तु मैं उन पलों को कभी भुला नहीं पाती जब एक सैनिक एक लम्बे समय के बाद अपने घर वापिस आता है । उसकी माँ स्टेशन पर बड़ी ही उत्सुकता से उसका इंतजार करती है तो मैं भी उसे उसकी माँ तक अति उमंगता से पहुँचाती हूँ। हाँ! क्योंकि मैं हूँ 'रेलगाड़ी'।

भारत में मुझे एक सम्माननीय स्थान प्राप्त हुआ इसलिए कभी मेरा नामकरण भारत की पवित्र नदियों के नाम पर किया गया जैसे गोमती एक्सप्रेस, गोदावरी एक्सप्रेस, गंगासागर एक्सप्रेस, रावी एक्सप्रेस आदि, तो कभी मैंने बिछड़ों को अपनों से मिलाया और दो देशों के समझौते का जरिया बनी, जिसे समझौता एक्सप्रेस के नाम से जाना गया। मैं इतराती हूँ इस बात पर कि सम्पूर्ण भारत में सर्वाधिक रोजगार उपलब्ध कराने का जरिया मैं ही हूँ। हाँ, क्योंकि मैं हूँ रेलगाड़ी।

मैं बहुत ही उत्सुक होती हूँ जब लोग बेसब्री से मेरा इंतजार करते हैं और फिर कुछ धक्का-मुक्की, छुट-पुट झगड़ों के बाद अपने साथ बैठे सहयात्री से दोस्ती कर लेते हैं और अपने सफ़र का आनंद लेते हैं। भारत में मेरा सफ़र यहीं नहीं खत्म हुआ, मैं और भी हर्षोल्लाषित हो उठी जब मेरी दो बहनें मेट्रो और मोनो रेलगाड़ी ने यहाँ कदम रखा और दूरी और समय को कम कर मुझे गौरवान्वित किया। हाँ! क्योंकि मैं हूँ रेलगाड़ी।

दुःख होता है तब जब कुछ लोग अपने स्वार्थवश मुझे जला देते हैं और मुझे अपने पथ से उतार देते हैं। विलाप होता है उन पलों को देख कर जब लोग दुर्घटनाओं का शिकार होते हैं । आज मनुष्य ही मनुष्य का हत्यारा बन बैठा है। पर मैं इन सब से डरती और थमती नहीं और पुनः अपने पथ पर निडरता से बढती रहती हूँ। हाँ! क्योंकि मैं हूँ रेलगाड़ी।

योगेश
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मन और आत्मा

ये मन और आत्मा क्या हैं?

वैज्ञानिक रूप से देखा जाए तो हमारे शरीर में न तो मन दिखेगा और न ही आत्मा। पर हैं, दोनों ही वास्तव में। लेखा की भाषा में देखें तो ऐसे लगेगा कि जैसे ये दोनों हमारी काल्पनिक संपक्तियाँ हों। अब आत्मा तो काल्पनिक संपक्ति है ही पर मन संपक्ति है या उत्तरदायित्व, पता नहीं। हम सोचते हैं कि यह शरीर ही हमारा अस्तित्व है, पर सच्चाई तो यह है कि हमारा असली अस्तिव हमारा मन और आत्मा हैं। क्यों? क्योंकि मन के काबू में इन्द्रियाँ हैं और इन्द्रियों के काबू में हम, और आत्मा तो है ही अमर। कितना अद्भुत बनाया है भगवान ने इन्सान को। दिखता हमारा शरीर है पर असल में जो चीजें इस शरीर को चला रही हैं वो दिखती ही नहीं हैं। जैसे कि हमारी सोच, हमारी भावनायें और हमारी आत्मा। क्योंकि हमारा शरीर अस्थायी है और ये सब चीज़े स्थायी हैं। हमारी सोच, हमारी भावनायें मरने के बाद भी हमारी यादें बनकर जिंदा रहेंगी। ठीक वैसे ही जैसे इस दुनिया की रचना और इसकी रचना करने वाला। इस दुनिया की रचना अस्थायी है पर रचना करने वाला स्थायी। पर हम मूर्ख लोग पता नहीं क्यों, सारी उम्र अस्थायी चीजों के पीछे भाग-भाग कर लगा देते हैं और स्थायी चीजें जिन्हें, हमेशा इस दुनिया में रहना है, उसे भुला देते हैं। इस दुनिया की रचनाओं से प्यार है पर रचना करने वाले को भुला बैठे हैं। अपने बनाये मंदिर-मस्जिद साफ़ करने में लगे हैं पर हमारा मन जहाँ वो परमात्मा रहता है उसे दुनिया की मैल और नफरतों से भर रखा है। हमें जीवन में सब कुछ स्थायी चाहिए, स्थायी नौकरी, स्थायी सुरक्षा, स्थायी बसने की क्रिया पर कभी ये नहीं सोचते कि ये सब अस्थायी हैं। स्थायी कुछ और ही है। ज़िन्दगी चाहे आप को दुनिया की सारी नियामतें दे दे जैसे कि अच्छी नौकरी, अच्छा साथी, अच्छी औलाद, इज्ज़त, शोहरत, फिर भी हमारी ज़िन्दगी में एक वक़्त ऐसा आता है जब हमें सब कुछ होते हुए भी खालीपन लगता है। वो खालीपन इसलिये है कि हम अस्थायी चीजों के पीछे भाग रहे थे, स्थायी चीज़ के पीछे नहीं। वो स्थायी चीज़ क्या है? वो परमात्मा। वो खालीपन क्या था? हमारी आत्मा की उस परमात्मा की ओर कशिश। हम अपने शरीर के हर अंग को खुराक देते हैं, मन की बातें सुनकर मन को भी खुराक देते हैं पर आत्मा तो जैसे हर वक़्त भूखी ही रहती है। उस आत्मा की खुराक है भक्ति, ध्यान और सुमिरन। पर किसका? जिसने इस दुनिया की रचना की है जो सर्व-शक्तिमान और सर्व-व्यापक है। पल्टू साहिब कहते हैं- "साहिब के दरबार में केवल भक्ति प्यार"। चाहे हिन्दू होकर जाओ चाहे मुसलमान होकर, उस परमात्मा से मिलने के लिए केवल एक ही रास्ता है भक्ति। इतना व्यस्त होते हुए भी हम हर काम के लिए वक़्त निकाल लेते हैं चाहे वो दफ्तर का काम हो, परिवार का काम हो या अपना कोई काम, पर जिस परमात्मा से हमारा वजूद है उसके लिए हमारे पास पूरे दिन में दस मिनट भी नहीं। हमें चाहिए कि हम उठते, बैठते, कोई भी काम करते वक़्त परमात्मा का सुमिरन न छोड़ें। धीरे-धीरे वो सुमिरन ध्यान में बदल जायेगा और ध्यान भक्ति में। मैं ये नहीं कहती कि हम घर-परिवार छोड़कर, भगवे वस्त्र पहनकर, त्यागी बन जाये पर जिस परमात्मा ने हमें बनाया है, इस सृष्टि की रचना की है, जो सबका सृजनहार है उसे कभी ना भूलें और उसका ध्यान और सुमिरन अपने नियमित कामों का एक हिस्सा बना लें।

सुश्री कामना वर्मा,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ख्यालों की दुनिया

जिंदगी ने कई
सवालात बदल डाले
वक़्त ने मेरे
हालात बदल डाले
मैं तो आज भी वही हूँ
जो मैं कल था
बस मेरे लिये लोगों ने
अपने ख़यालात बदल डाले।

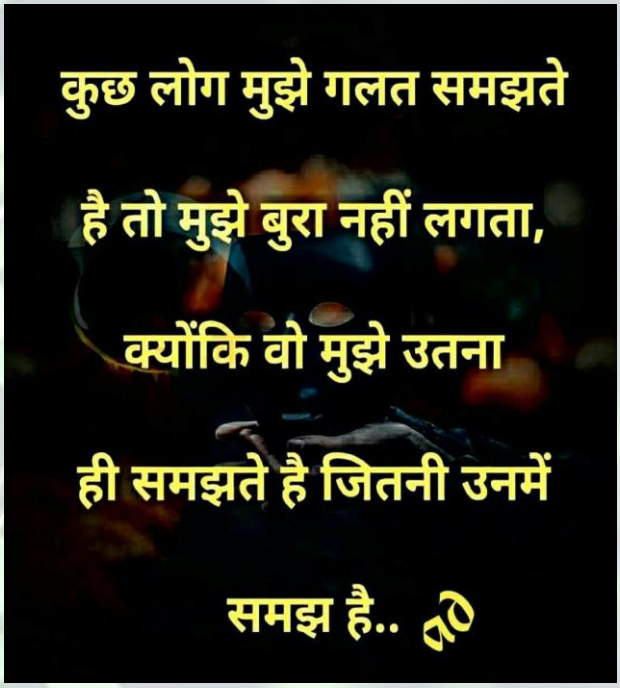
कुछ लोग मुझे गलत समझते
है तो मुझे बुरा नहीं लगता,
क्योंकि वो मुझे उतना
ही समझते है जितनी उनमें
समझ है..

अदब से
झुकना
मेरी फितरत में शामिल था...
मगर हम क्या झुके लोग तो खुद को
खुदा समझ
बैठे।

जो दिलो में
शिकवे और जुबान
पर शिकायतें कम
रखते है वो लोग हर
रिश्ता निभाने का दम
रखते हैं...

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रेलवे-वाणिज्यिक का कार्यालय

4, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002